अमिताभ खण्डेलवाल

(छमोड़-प्रो० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण' अर श्रीमती कांतिबाला)

री

पुण्य-स्मृति में

सजळ प्रार्थनावां सागै

समर्पित

श्री राज्यपाल
उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ
10 मार्च '87

सन्देश

डॉ० मदन केवलिया रो राजस्थानी कहाणी संग्रह "काळी कांठळी" आज रै मिनख री नियति अनै सामाजिक मूल्यां रै बदळाव रो मोवनो चित्राम है।

हूं कहाणीकार री सफलता री कामना करूं।

मो० उस्मान आरिफ़
राज्यपाल
उत्तर प्रदेश

मुखबंध

कहाणी मानव-चेतना रो चितियो प्रवाह है । मिनख रै आदि विकास सागै इण रो जुड़ाव है, पर उण रै हरोज रै जीतब रै सागै इणरो गहरो लगाव है । मानव-मन री विसंगतियां रो ओ काचो चिट्ठो है, तो सामाजिक यथारथ नै अलग-अलग कूणां सूं परदरसित करण आळो रंगीन अलबम है । अनुभूत जीवण सत्य सार्थ मोकळो बळ देवण रै कारण ओ अेक जुगतो दस्तावेज है अर इणमें जिनगी री हर घड़कन नै सुणण-ओळखण री अघोरता भी है । जीवण रो अनुभूतियां अर नीतियां रो कहाणो ई साचो सबदकोस है ।

कहानी जीवन रै अनुभवां री भोत समरथ विद्या है । उण रो जुड़ाव आपणै जग-जीवण सूं इधकाई सू हुवै । कहाणी बदलते सदर्भ अर जीवण रै संघर्ष री अंठ-पैठ,बधीक सलीके सूं देवै । अेक छिण री जिनगी सारु, सौ बार मरण आळै आज रै बेबस आदमी रो [illegible]वाण. कहानी में ई चोखै ढग सूं व्है सकै । कहाणी देस अर [illegible] नै सत्य नै सांगोपांग ढग सूं चितरित करण आळो [illegible] जीवण रै मूल्यां नै अंकित करण आळो

[illegible]

[illegible] . रो मूल-केन्द्र है । सरजण [illegible] है । उण री लेखणी ई [illegible] परिस्थितियां रै परिवर्तन रै [illegible] साथ परिवर्तन हावै अर मिनख

न नुवैं परिवेश नैं समभण री कोसिस करणी पड़ै जगांईज व्यक्ति अर समाज अन्तर विरोधी नी है। कहाणी व्यक्ति अर समाज रैं मांयलैं सम्बन्धां उजागर नैं करैं।

"कहाणी रो काम" डा. देवराज उपाध्याय लिखें, "मानवता री भीतरी समस्यावां नैं समभणो अर समभावणो है।"

लिखारां आपणैं परिवेश सूं भी प्रभावित हुवैं अर समाज नैं प्रभावित भी करैं। कहाणी, परिवेश री महताऊ अभिव्यक्ति है। कहाणीकार आपणी आसै-पासै री जिनगी नैं दीठ सूं देख र उणन बाणी देवैं। आज रो जीवण अर परिवेश जटिल है, समस्यावां री घणी मचोळ माय इनसान घणो परेसाण हुयग्यो है, जगांईज कहाणी री घड़तर घणी जटिल हुयगी है। इणभात कहाणीकारां नैं ई घड़तर रो बार बार पड़भजण करणो पड़ै।

कहाणी आपांनैं जगत सूं साक्षात्कार करावैं है- आ बात आज री कहाणी मे इधकाई सूं निजर आवैं। बाज रूप में कैयो जा सकैं है कैं कहाणी मे यथारथ जीवण रा कैयी स्थितियां रो परख अनैं मूल्यांकन हुवैं।

□□

इण संग्रै री कहाणियां मांय जीवण रै मोकळै पड़ावां पर दरसा री चित्रण है। मिनख री सुवारथ, इनसान रैं चेरै री माट पर नुमाइश, घेवट जीवण री दुरदसा, [illegible] री [illegible] हिवड़ै री इकलास, दीनदारी री कुपाव, टूटणो, [illegible] री बेबसी, राजस्थान री अकाळ मारिक स्थितियां रा बखाण इणां कहाणियां में हुयो है।

मुखबंध

कहाणी मानव-चेतना रो भितियो प्रवाह है । मिनख रै श्रादि विकास सागै इण रो जुड़ाव है, श्रर उण रै हरोज रै जीतब रै सागै इणरो गहरो लगाव है । मानव-मन री विसंगतियां रो श्रो काचो चिट्ठो है, तो सामाजिक यथारथ नै श्रलग-श्रलग कूणां सूं परदरसित करण श्राळो रंगीन श्रलबम है । श्रनुभूत जीवण सत्य मायं मोकळो बळ देवण रै कारण श्रो श्रक जुगतो दस्तावेज है श्रर इणमे जिनगी री हर धड़कन नै सुगण-श्रोलखण री श्रघोरता भी है । जीवण रो श्रनुभूतियां श्रर नीतियां रो कहाणो ई साचो सबदकोस है ।

कहानो जीवन रै श्रनुभवां रो मोत समरथ विद्या है । उण रो जुड़ाव श्रापणै जुग-जीवण सूं इचकाई सूं हुवै । कहाणी बदलतै सदभे श्रर जोवण रै संघर री श्रंठ-पैठ,बधीक सलीके सूं देवै । श्रक छिण रो जिनगी सारु, सौ बार मरण श्राळै श्राज रै बेबस श्रादमी रो बखाण, कहानो में ई चोखै ढंग सूं व्है सकै । कहाणी देस श्रर काल रै साचै सत्य नै सांगोपांग ढग सूं बितरित करण श्राळो विधा है, श्रर जोवण रै मूल्यां नै श्रकित करण श्राळो समरथ माध्यम भी है ।

मिनख ई ससार रै ज्ञान-विज्ञान रो मूल-केन्द्र है । सरजण-सील मानसिकता मार्द मिनख रो कथ्य है । उण री लेखणी ई बखत रै परमाणां नै ठावो राखै । परिस्थितियां रै परिवर्तन रै

न नुवें परिवेश नें समझण री कोसिस करणी पड़े जगांईज व्यक्ति अर समाज अन्तर विरोधी नी है । कहाणी व्यक्ति अर समाज रै मांयलै सम्बन्धां उजागर नै करै ।

"कहाणी रो काम" डा. देवराज उपाध्याय लिखै, "मानवता री भीतरी समस्यावां नै समझणो अर समझावणो है ।"

लिखारा आपणै परिवेश सूं भी प्रभावित हुवै अर समाज नै प्रभावित भी करै । कहाणी, परिवेश री मङ्गताऊ अभिव्यक्ति है । कहाणीकार आपणी आसै-पासै री जिनगी नै दीठ सूं देख र उणन वाणी देवै । आज रो जीवण अर परिवेश जटिल है, समस्यावां री घणी मचोळ माय इनसान घणो परेसाण हुयग्यो है, जगांईज कहाणी री घड़तर घणी जटिल हुयगी है । इणभात कहाणीकारां नै ई घड़तर री बार बार घड़भञ्जण करणी पड़ै ।

कहाणी आपानै जगत सूं साक्षात्कार करावै है- आ बात आज री कहाणी में इधकाई सूं निजर आवै । बाज रूप में कैयो जा सकै है के कहाणी मे यथारथ जीवण रा कैयी स्थितियां री मरुप अनै मूल्यांकन हुवै ।

□□

इण संग्रै री कहाणियां मांय जीवण रै मोकळै पढावा अर
... चंर री माळ
... मापामाणी
... [illegible]
[illegible]

राजस्थानी मांय लिखण री सरुपोत इणी कहाणियां सूं कोनी है । अग्रज स्व. श्री पुरुषोत्तम अर स्व. श्री गणेश केवलिया रो आशीर्वाद म्हारो सम्बल रैयो है । इणां रै अलावा अग्रज श्री ओम केवलिया, श्री रावत सारस्वत, डा. परमानन्द सारस्वत, श्री लक्ष्मीनारायण रंगा, श्री श्रीलाल जोशी, श्री ओंकार, श्री वेदव्यास, चन्द्रदान चारण, आदिक साहित्यकारां म्हारो उत्साह बढायो है । धर्मपत्नी श्रीमती डा. प्रतिमा केवलिया अर पुत्र शरद म्हारै एकांत मांय खलल कोनी करी, आ चोखी बात है । आवरण सारु गौतम, पर विद, सुधीर अर बाबर दौड़ भाग करी है ।

राजस्थानी री अेकरूप [illegible] प्रयास हुय
इण सग [illegible] मैं सै प्रचलित [illegible] या नै अ
आ [illegible] या सारु [illegible] ण री
ता सा [illegible] साहित
हू ।

म

मिंतरता

कागद बांच'र बीनै इयां लागो जाणै कोई लाटरी रो इनाम मिल्यो हुवै, 'अरे सुणो'......' उमेश बठै सूं ई बोल्यो।

पौन जाणै थोड़ी देर बारता हवगी। कमला आळा हाथ पल्लै सूं पौंछती रसोई घर सूं निसरी। देख्यो धणी हाथ मे कोई पत्र ले'र हस रैया है। घणी देर पछै बी, बारै चेहरै ऊपर सलाई देखी ही। बा समझी कै सायद बारी तरक्की (ऊंचो होदो) होगो हुवै। कई दिनां सूं उमेश कैद रैया हा कै बै जल्दी ई वरिष्ठ अध्यापक हो जावैला। बित्ता ई साला सूं बै सहायक अध्यापक रै पद माथै हा, पर अब पदोन्नति री सूची मे सबसूं ऊपर हो।

'तरक्की होगी भी।' गाल मैं दूजी लट नै हटावती कमला हंस'र बोली।

'हां, होगी' बो हरख्यो। 'म्हो देख सक्सेना रो कायद–कुर्सेना रो एम. पी॰ बणगो है। काबुमा सूं टूं'कणो हुसी।'

कमला रो चे'रो बुझग्यो। टा नीं ऐ सक्सेना रा इत्ता दीवाना क्यूं है। जद ओ इयांरै सागै मास्टर हो (मास्टर हो) जणै पूरा अठारा घंटा अठै पड़्यो रै'तो। कई दफा तो रात नै ई अठै सो जातो। कैतो, 'भोजा-

ईजी, आपरै अठै कोई टाबर नी है, मनै ई खोळै ले ल्यो।' तद जाणै किया लागतो हो। ऐ तो सच्चैई बीने ले'र मस्त हा। दोनां बिचाळै आयु रो लम्बो फरक होता थकै ई मायलां रो तरयां रैता।

'अबै आपरै बाईस्कोप, होटल रा दिन फेर आ रैया है। जणै ई खुस हो।' कमला रो बुझ्योड़ा सुर जाणै काई जदै तलाव नै कांकरी री तरै थोड़ो सो हिला'र सान्त होग्यो। बो आपरी दुनिया मे मस्त हो।

दूध उफणनै री बास दोना नै चमकाय दिया। 'अरे.........' कमला भाजी। चाय खातर दूध राख्यो हो।

बो मांचै ऊपर बैठग्यो। दिसम्बर री जोवती ठंडी धूप बीरै खनै आई पण बीरो मूड देख'र गायब होगी। बै आंख्या बन्द करली ही। बद पलकां पर दरवाजै री छाया छायगी। दूजा चित्र पुतल्या पर मंड'र गुजरता रैया।

□□

सक्सेना भटलोटिये दांई इस्कूल मे आयो हो। पैली श्रेणी में इतिहास री परीक्षा पास करता ई बो राज री इस्कूल मे सहायक अध्यापक बणग्यो हो। आपरै व्यक्तित्व, विनोद प्रियता अर कुसाग्र बुद्धि सूं बो आतै ही स्टाफ अर विद्यार्थ्यां रो चहेतो बणग्यो हो। हरेक विषय मायं बोलण री बीरी खासियत सूं सै प्रमावित हा।

'स्कूल मे इस्सो जीनियस।' उमेश आपरै साथ्यां मे कैयो तो बै सै हंस्या।

'बा' (बाप) [illegible] वित [illegible] म बरछी री नोक दांई आरम्पार [illegible]

पतो नी, किया ईं बातचीत रो वैरो सक्सेना ने पासियो। बो बीरे तनै ग्रायो, 'उमेश जी, जाणो हो कै दुनिया में सगळा एक सरीसा कोनी हुवै-मापनै म्हारै खातर सुणनो पड़्यो। ई वास्ते हू बो'त सरमिन्दो हू।'

तब सा लेबर भाज ताई सक्सेना बीरै मन रै घणों नेड़ो रैयो है। कमला चाय ले'र ग्राई तो बो बीयाई ग्राख्या मूंद्या चित्र देखण में व्यस्त हो।

'छ साल पाऊँ आपरो समान लेबणनै आ रैयो होसी' चाय इस्टूल पर राख'र बा मूढ़ै माथै वैठगी। 'च र साल पछै तो पत्र आयो है अर बो भी समान री खातर। पैसा-पैसा मजूरी कर फेर आपू सूं किसा प्रेम भरया पत्र आता हा.......... ऊंचो होदो पायर सै घमंण्डी हुय जावै, सगळा नै आफरो चढ़ जावै है।'

'चुप रैव' वै अचाणचक तेवर बदल्यो। 'जिकै मिनख रै बारे में जाणकारी नी हुवै तो बा बक नी करणी चाहिजै।'

'जाणकारी' कमला री आख्यां में भुळक, व्यंग्य सीज अर नी जाणें काई-काई तिरग आगा 'म्हेसूं ज्यादा जाणकारी और कोनै होसी। आई. ए. एस. री त्यारी करते-करते ऊब'र बो मरै ई तो समै काटण नै आ जानो हो-कित्ती बार रात रा बारह-बारह बज्या उ'ठर चाय बणाकर बीनै मिनायो। सस्ता हालत मे भी कदेई जबान सूं उफ तक नी करी। थे बीरै सागै खुस रैता-हू इनै ई म्हारो सौभाग समझती।'

'म्हेसूं नू कैणो कै चावे है।' वैरै स्वरां में चिड सूं घणो दर्द हो।

'थे बीगी परीक्षा वास्ता पोथ्या भेळी करता मे कित्ती दौड़ भाग

करता था–कदै दिल्ली सूं कदैई जयपुर ता पोथ्यां मंगवावण री जी तोड़ कोसिस करता रै'ता–जाणै थेई परीक्षा दे रैया हो ।' बा जाणैं खुद नै कै रैई ही ।

'भई हूँ तो आयु-सीमां पार करग्यो हो, पण मित्र रै खातर भी सब कुछ करणो गुनाह थो ?' बी'रो आहत सुर कमला नैं छूग्यो ।

'हूं आ नी कैऊं–मनै तो अफसोस (धोखा) ई बात रो है, आपरी भावनावां नैं बो आपरो भायलो कद समझ्यो । म्हें म्हारी अकल सारु भी ई जाणग्यो है कै बो खाली आपरै नफै नैं नजर में राख'र आपसूं मैत्री भाव बढातो रैयो–अर जरूरत पूरी हुई तो दूध माय सूं माखी दाई निकाल आपनै ....।'

'बकवास बन्द कर' बो उठ'र ऊभग्यो । बो आपरै जी री तड़पण नै प्रगट करण में असमरथ हो । कमला बींरी दु:खती रग नैं ई नी छेड़ी अपितु भीतर न जाणैं बरसां सूं बन्द पड़ै मन रै पेटीबाजै नैं फूंक दे'र, बींरी धूड़ उडायर, फेर बजाणो सुरु कर दियो हो ।

बो तेजी सूं उठ्यो अर धमाकै सूं बाण्डी खोल'र बारै निसर्यो । ... रै ख्याली मांय सूं भाप निकलती बन्द होगी ... भाप ऊपर ... दनाई आवगी ही

... बिना ...

... हुस्या ।

'था' ...

दड़बड़ अवाज सूं बींरी नींद उगड़गी। तावड़ो अबै टुरणै री खबर दे रैयो हो, कंपकंपी सी हुई। बो उठ'र बैंच रै एक खूणै मे जा बैठ्यो।

'नमस्ते गुरुजी।' कई चेला शरारत सूं हसता हुया बींरै कनै सूं बै रैया हा। बो खाली नस ई हिलाय सक्यो। सामै बणै मिन्दिर रै पगो-थ्यां ऊपर खेलता टींगरां नै देख'र एक भयंकर अन्तर्नाद बीनै झकझोरण लाग्यो। खाली गोद री बात सोच'र कमला रो क्रोधित होणो बीनै सुभाविक लागण लागो। सामै री भींत ऊपर 'परिवार-नियोजन' रै लिख्यां वाक्यां नै देखतै ई बींरो जी मिचलावण लाग्यो। ईयां लागो बो खुद कुण्ठित हुवै, मन री विकृत्यां पूरे आडम्बर रै सागै बींरै मांय बैठी बापड़ै निसरण री बाट देख रैयी हो। कमला री कुण्ठा, अर बींरो अरपोड़ो अहं कांई खुद बींरी देन नी है? मौज-मस्ती रा दिन तो बो गरीबी री जलती सलाखों रै बीच रैयर काट दिया हा। बसंत री चीलस्यां हमेसा ई बींरै सुखा री मिठाइयां माथै पंजा मारती रैई है। कठै ताई बचाएं राखै बो ई मुदारथी संसार री चारदीवारी में हंसी री रंग-बिरंगी बुलबुलां नै? बींनै कैद करण वास्ता न जाणै कित्ता सैयाद उतावळा है?

□□

अंधारी होणै पछै बो घर पूग्यो तो ट्रक सूं 'लीक' करण वाळै डीजल री तरै तनाव च्यारूमेर फैल्यो हो। दरवाजो खोल'र कमला जल्दी ऊं गई परी अर सीरख ओढ'र सोयगी। किवाड़ ढकती बगत बींरा हाथ धूज्या अर आंख्यां री कोरां माथै गीलापण उभर आयो। थक'र चूर हुया पगां सूं आंगण पार कर'र बरामदे में आयो। एक कमरे में बत्ती जग रैई ही अर दूजो कमरो ... ... मस्सेन ... महान् रास्योड़ो हो। चार

"....... कमला हाल ई मजाक मे कँवे है, 'वाँ बेचारो सई कैय'ग्यो हौ क थारो भ्रो एंसाण बो कदै नी उतार पावैलो–भ्रबै ई जनम में तो पाच सौ रुपियां री उम्मीद ई छोड दो।' 'वो इसी बातवां सूं दुःखी हो जातो–'दुनिया में कैण कैंरेई दिल नै चीर'र देख्यो है भ्रौर कर्म कर'र फल री इंछ्या करणी नी चइमै। गीता में भ्रा ई तो लिख्योड़ी है' बो खुद नै बस मे कर'र कैं भी दैवे है तो कमला भ्रा कैयर उठ जावै है, 'इसो निस्काम उपदेश भ्राप जिस्से संता रै वास्ता ई तो है।'

'मांयनै चालोला या भ्रठै ई बैठा भ्रापरै कालजै री कौर नै याद करता रैबोला।' बो चोक्यो–लागो साचै ठण्डी पौन चाल रैई है भ्रर इसे मौसम मे वरामदै मे बैठणो ठीक नी है। काई होग्या है बीनै? पत्र तो चैन हराम कर दीनो है। कमबख्त भ्राणै री तिथि भी तो कोनी लिखी। ढानैं कद ताई खुद सूं भिड़नो पडंला। किसी भ्रजीब बात है कै एक भ्रणजाण भ्रादमो खातर वा भ्रापरै दाम्पत्य सुख नैं लीलाम कर रारयो है। लारला चार साल किण तरै ऊं जूंभता–लडता वैं काट्या है, बैं रो जी जाणै है।

बो मांयनै भ्राय'र सीरख सोचर बैसग्यो–कमला भ्रठैई सूती हो, ई कारण पसपरणो न्यायो हो। कि नीं, वेकार ई गंवाई भ्रा जिन्दगी। ना घर मे टावरां री रमभम न मन में इंछावां री वेल पैल भ्रर ना सुगाई नैं बैरो भरोसो। सो कियो करायो किरकिर हो गयो। मेनै मौंय खोयोड़ो कूंची दाई बो वैन भ्रर सरधा जीवन रै मेलैं से जोवतो रैयो, पण निरासा हाथ लागी।

'लो खाणो खा लो।' थाली परथरणे पर राख'र कमला भीजी भ्रांख्या ऊं बोली 'दसेना रै सारै न जाणै किसी दफ्न भ्रामुवां रो नस्लो खागो–

ई मन में बो कवि टैनिसन री सेग्मा याद कर लेतो हो–'शी मार्ट बी मोर शी विस बाई ।' दुनिया मसबी, बादरकोपों, थेटरां, होटलां में मौज मस्ती में डूबी होती, ध्यांह कानी रंगीग्यां मस्त्या रा फुवारा होती मर नसीं मे भूर बेपनाह सातम मर बो जिन्दगी री हरेक बाजी हार'र मान मपणीं माप सूं ई हार बैट्यो ई–एक-एक क्षण, इच्छावां नैं कतरणी री तरह काटतो जा रैयो है।

म्हारी सौगन है मबै चुप हो जावो।' सिसकते सुरां में कमला कैयो मर बसी बुफा'र बैनैं बाथ्यों ने भर लियो।

☐☐

बादलां सैं'र रो घेराव कर लियो हो मर सूरज रै माथ्यम सूं बैं बार निकलने वास्ता कसमसाय रैया हा। पिछली रात परेसाण होणैं मर देर ऊं सोणैं रै कारण बो हाल ताई सो रैयो हो। मदीतवार हो, ई खातर कमला बीनें जगायो कोनी, मगूठी सीरख नैं चोखी तर्या ढालर मई परी।

बाण्डै नैं खड़काणै री जोरदार मवाज सूं अचानक बींरी मांख्या खुलगी। सीरख नै पगां ऊं नाख'र बो भट उठ बैठ्यो–सिर रै एक कूणैं में ज्या पाती सूं कोई खुरच रैयो हो। हाथा सूं सिर नैं जोर सूं दाब्यो मर मावाज दीनी–'कुण है बारे ?'

भांक'र देख्यो दो सिपाई मायनैं बड़ रैया हा। मांसैं रो दर्द मौर घणो होण लाग्यो। खनैं राखोड़ी सूटर पैं'र्यो मर मफलर उठा'र माथैं नैं बाध लियो।

सलाम कर'र सिपायी जो कुछ कैयो–बीरो मतळब ओ हो कै वै अठै रै एस. पी. साब रै घर सूं आया है, जिका रै अठै रात में दूसरा एस. पी. मवसेना सा'ब पधार्योड़ा है, वारो समाचार आपरै अठै राखोड़ो है, आपनै बठै बुलायो है।

'वै आईग्या।' बीरो बोखलाट, अचम्भो, जिग्यासा रै सागै-सागै खिन्नता भी छुप नी पाई। कमला एक रहस्मय मुलक ओढै चुपचाप ऊभी रेई।

'बा जीप भेजी है।' अेक सिप ई कैयो, जिका बीरी बोखलाट नै देख'र राजी हो रैयो हो अर व्यंग भरी हसी सूं बीरै कानी देख रैयो हो कै इस्से टटपूंजिये मास्टरिये नै बुलाण खातर भी एस. पी. साब रै अठै सूं जीप आवै है।

'जीप आई है।' बो उछल्यो, ज्यां बैनै मंत्री पद री सोगन लेवण रै राजभवन सा तेडो आयो हुवै।

'देखो..........वे कमला नै सम्बोधित कर्यो ई सा'बा खातर चाय बणावो, जिते हूं हाथ-मूंडा धो'र आऊं।'

'अरे नी सा'ब,' बो सिपाई कलाई सूं बोल्यो, 'थे त्यार हुवो, म्हे अबार पूठा आवां।' अर पूठो पडूत्तर सुण्यां बिनांई वै दूटां सूं आंगण नै बिचरता बारै गया परा।

'बस, देख लियो।' बारै जातांई कमला फूट पडी–'कठै बा आपरा-पणाई अर आदर्श कठै गया? मास्टर अफसर बणनेई इंसानियत गायब होगी नी? सम.न राखण खातर आपणो घर है, पीसा बाखण आगणो घर है, सायबां री सा चोप्यां आणु बारता आप हो–परा कदेई सोच्यो कै

पूरो एक कमरो भर्‌यो होणै सूं च्यार साल सूं बांनै कित्ती तकलीफ रैयी होसी, समान किराए ऊपर राख'र जातो तो कित्तो पइसो लागतो म्हे भी तो भाड़ो दे रैया हां।

बिना कीं कैयां, बो नावणघर कानी चल्यो गयो। चे'रो ई बात गवा है कै कमला री बातां सू सहमत होणै री खातर ग्रो मथर्ष कर रै हो।

□□

जीप एस. पी. रै बंगलै नै पूंची तो बंदूक लियोड़ो एक सिपाई आगै आयो अर बीनै सान नै पड़ी कुरसी री ग्रोर बैठण रो इसारो कियो। लूम्बो अर अणाज ण वातावरण बीरै चारां कानी छ्वण लागो। थके पगां अर तणाव भरे चैरै सूं बो कुरसी मायै जाय बैठ्यो। बो बखत एक दड़ी आय'र बयारयां नै लारै छुपगी, जिकै वास्ता एक नान्हो प्यारो बालक दौड़तो हुयो आयो अर चकित आंख्यां सूं अठीनै-बठीनै देखण लाग्यो। बीरी रगां में पुन बेवण लाग्यो, 'बेटा बा गेंद दड़ी।'

'थैक्यू' बो टाबर दड़ी उठा'र बीरै.सनै आयो।

'कांई नाम है थारो ?'

'ग्रनिल सक्सेना।'

'सक्सेना' अठैरो एस. पी. तो पाठक है। 'थारा डैडी कुण है ?'

'विजय सक्सेना, एस. पी.' टाबर भागग्यो।

'सक्सेना' बीरी खोपड़ी में हाटन लिम दाई एर्‌ आगै मलीग्या चालन लागो। बो घबराग्यो। 'तो कांई सक्सेना परणीजग्यो ? कस्यो गांव रै

ऐडैं-गैडैं होसी-क्या बो भटै सपरिवार आयो है ? चार बरसां रै बाद काल ई तो चिट्ठी आई-ई बीच में बैं काई कियो. कठै रैयो, काई टा............बो मायै विस्वास करै कोई ? सच्ची दोस्ती रो नमूनो पेश करण में बैं काई कसर राखी ही ? इनै काई मुबारख हो बीरो ? किती बार रजिस्ट्र्या करा'र भेजी ही ? लाइब्रेरी री पोथ्यां रा पइसा चुकाया है। बै पाच सौ रुपया जे बैंक में राखतो तो दुगणो हो जातो। दाम्पत्य जीवन री सरासर बरबादी आज ताई होती आई है-सिरफ ई सक्सेना री दोस्ती खातर। काई हाथ आयो ? बरबादी और लड़ाई। धूं धूं करते धुखतै धणी-लुगाई रै जीवण रो सुपनघर ! इत्तो ई तमीज कोनी कै आए व्यक्ति सूं मिल तो लेवै। 'क्या न होई इन्सान इत्तो मतलबी हुवै है 'प्रभुता पाहि केहि मद नाहि।'

'गट' में बड़ आरै एक कान्स्टेबल पाणी भर्‌या गिलास राखण लाग्यो 'सक्सेना जी काई कर रैया है।।' बीरी गलो एकदम सूखग्यो हो, बडी मुसकिल सूं सबद बारै आया।

'फेमिली सागै सिराइण करै है। भगार थारै है।' बोनै हैरानी ही रैयी ही कै कान्स्टेबल अदब सूं बात कर रैयो है।

'क्या सक्सेना सा'ब री फेमिली भी आयोड़ी है ?' बैं डरतै हुवा सूं पूछ्यो हुवै।

'हां, आपरी मेम सा'ब सागै नास्तो करै है-डाक्टर भी बड़ै है।' --

बो पयो परो, पर बीरै दिमाग मायै टन्नी बांधे राख'र मेली। घर में ढेरणो घोर अपमान है। गरज होती तो घरै आ'र इन्दै समान

पूरो एक कमरो भर्‌यो होणँ सूं च्यार साल सूं बांनै कित्ती तकलीफ हो रैयी होसी, समान किराए ऊपर राल'र जातो तो कित्तो पइसो लागतो? म्हे भी तो भाड़ो दे रैया हां।

बिना की कैयां, बो नावणघर खानी चल्यो गयो। चे'रो ई बात गो गवा है कै कमला री बातां सूं सहमत होणँ री खातर भो मयर्य कर रैयो हो।

□□

जीप एस. पी. रै बंगलै नै पूंची तो बंदूक लियोड़ो एक सिपाई आगै आयो अर बीनै लान मे पड़ी कुरसी री ओर बैठण रो इसारो कियो। लूवो अर अणाज ण बातावरण बीरै चारां कानी छ्वण लागो। थकै पगां अर तणाव भरे चैरै सूं बो कुरसी मायै जाय बैठ्यो। बो बखत एक दड़ी आय'र क्यारयां नै लारै छुपगी, जिकै वास्ता एक नान्हो न्यारो बालक दौड़तो हुयो आयो अर चकित आंख्यां कै अठीनै-बठीनै देखण लाग्यो। बीरी रगां में खुन बेवण लाग्यो, 'बेटा बा गेई दड़ी।'

'थैंक्यू' बो टाबर दड़ी उठा'र बीरै खनै आयो

'कांई नाम है थारो?'

'अनिल सक्सेना।'

'सक्सेना' अठैरो एस. पी. तो'

'विजय सक्सेना, एस. पी

'सक्सेना' बीरी खोपड़ी नै

लागी। बो घबराग्यो। 'नो

इणै भर बो जिकै भयंकर तूफान सूं गुजर्यो हो, बीरी बै कदेई कल्पना नी की ही । सक्सेना आपरी फेमिली रै बारै में बतायो तक नी अर अई बो आपरी उठै आणै में कांई रुचि दिखाई है । कित्तो बेवकूफ बण्यो बो ईं बरसां में । समझदार इन्सान नै पंचाण लेवै है, पर बो आज तांई ईं मामलै में बज्र मूरख है । सक्सेना रै पुलिस लैण में आणै पर बै कांई कांई कल्पनावां की ही । जाणै बो खुद ई एस पी. बणग्यो हुवै । सक्सेना बी बखत ईं रो श्रेय मनैं ई दियो हो । क्या वे कदेई बीरी हैल्प 'नी' की ही ? पर अबै कांई फायदो ईं बातां नै याद करण सूं । बखत एक सरीसो नी रैवै तो इन्सान भी एकसा नी रैवै । आहत मन री चीत्कार सुणनै री फुरसत आज कीनै है ? देस रै ऊंचै सूं ऊंचै मिनख सूं लेर नीचे ऊं नीचै तबकै रा लोग आप आपरै सुवारथ अर घमण्ड री तुष्टि करण में लागोड़ा है । अो ई सबरो आदर्स बणग्यो है । ईमानदार अर गरीब इन्सान तो बेगुनाह मार्यो जावै । घमण्डी, चलाक, हुणै सूं भर्योड़ा, घाती, धूर्त अर सुवारथी बणो अर ईं तरै कमावण खातर दूजा लोगां नै ईं त्यार करो—अो ई जीवण—दरसण होणो चइजै, नीतर फूल सूं नाजुक भी भळा दयालु, परोपकारी बण'र खाली आपरी दिमागी, दिली अर भौतिक देवाळियापण ई घोषित करणो है ।

□□

गली में घुसतै ई लोगां री आंख्यां जिकै संदेह अर विचित्रता रा चस्मा पहर'र बीं माथै टिकी, बो सरम सूं पाणी पाणी होग्यो । उतर'र बै आगै ओर कै दो-चार जणां नै कैयो भी, '[illegible]'

ले जासी। नास्ता कर रैया है सो…………खैर, अबेई चेत जाणो हिन मे रैसी। मोत भाग लिया मिरग तृस्णा लारै। पग-पग चुभण आळी कांटां नै गुलाब समझ'र कठैताई चाल्यो जा सकै। दूजा लोग पाणी पीवै जणैं आपणी तिस किया बुझै ? आपरै मरै बिना सुरग नी मिल सकै।

वो उठ'र उभो हुयो। फाटक ताई आयो, बंदूकधारी सिपाई हांसी उडावण री दीठ सू देख्यो–इस्या निकम्मा लोग रोज ई उठै आता रैवै। वो बाहर निकलण आळो ई हो कै 'हलो' रो सुर बीनै सुणीज्यो। सक्सेनाबीरै खानी आ रैयो हो-वो फेर पुराणो भायलो बणग्यो सर लाट'र बीरै खनै गयो तो बै ईनै बीनै देख'र ठण्डो सो हाथ आगै बढ़ायो।

'एक्सक्यूज मी, आई हैव बीन वैरी बिजी, सिम आई केम हियर लास्ट नाइट। हां सवार थे घर पर रैसो ?'

'हां, हां' बीं में ताजगी आयगी ही। आ रैया हो नी। 'नो मी' बै सिर हिलायो, 'कुछ और काम है, फेर आसूं-हां हणै दो-तीन सिपाई आय'र म्हारो समान पैक कर देसी।' बो धीरै मूं मुळायो-'साथळ है नी।

बीरै चं'रै माथै काळप पुतगी। सक्सेना सायद समझग्यो हो-'अरे हूं तो मजाक कर रैयो हो, मोजाई जी कियां है ? फाइन।' बीं टेम ई जीप बठै आयगी। 'रामधन' नीचे उतर'र खड़ै ड्राइवर मूं सक्सेना कैयो, 'थूं ई साब सागै जाय'र म्हारो समान लिवाय कुछ आदमी और लै ले।'

ड्राइवर सलाम कर'र जीप में बैठ्यो कै बीरो हाथ पकड़'र सक्सेना कैयो-'अछ्या, थे ह्यारै सागै जाओ।' पर बीरै जीप ने बैठणे-बैठणे बो आदमै चल्यो गयो।

रस्ते भर बो जिकै भयंकर तूफान सूं गुजर्यो हो, बीरी बै कदेई कल्पना नी की ही । सक्सेना आपरी फमिली रै बारे में बतायो तक नी अर नई बो आपणी उठै आणै न कंई रुचि दिखाई है । किस्तो बेवकूफ बण्यो बो ईं बरसा म । कमला इन्सान नै पंचाग लेवै है, पर बो आज तांई ई मामले में यक्ष मूरख है । सक्सेना रै पुलिस लैण में आणै पर बै कांई कांई कल्पनावां की ही । जाणै बो खुद ई एस पी. बणग्यो हुवै । सक्सेना बीं बगत ईं री श्रेय मनै ई दियो हो । क्या वे कदेई बींरी हैल्प 'नी' की ही ? पर अबै कांई फायदो ई बातां नै याद करण सूं । बगत एक सरीखो नी रैवै तो इन्सान भी एकसा नी रैवै । आदमी अहं री चीत्कार सुणनै री फुरसत आज कीनै है ? देस रै ऊंचे सूं ऊंचै मिनख सूं ले'र नीचे ऊं नीचै तबकै रा लोग आप आपरै सुवारथ अर घमण्ड री तुष्टि करण में लागोड़ा है । ओ ई सबरो आदर्स बणग्यो है । ईमानदार अर गरीब इन्सान तो बेगुनाह मार्यो जावै । घमण्डी, चलाक, हुनर सूं भर्योड़ा, थातो, धूर्त अर सुरबाधी बणो अर ई तरै ऊ चालण खातर दूजा लोगां नै ई त्यार करो–ओ ई जीवण–दरसण होणो चइजै, नीतर फूल सूं नाजुक जी माळा दयालु, परोपकारी बल'र खाली मारो दिमागां, दिली अर भौतिक देवाळियापण ई घोषित करणो है ।

□□

गली में घुसते ई लोगां री आंख्यां जिकै संदेह अर विचित्रता रा चस्मा पहर'र बी माथै टिकी, बो सरम सूं पाणी पाणी होग्यो । उनर'र बै जोर जोर ऊं दो–चार जणा नै कैयो भी, 'आपरो हूतो ग्यो...'

आयली आपरो समान लेवण नै आयो है' पण सिपायां री आंख्यां मे नाचतै व्यंग भर उपहास नै देख'र बो चुप होयग्यो। कमला दरवाजे पर आय'र जीप रै मांय आंख्यां सूं टटोलण लागी। बो कमला खानी देखण री हिम्मत नी जुटा पायो। आछो हुयो कै कमला पैलाऊं कमरो खोल राख्यो हो–बो सिपायां नै लेय'र बी कमरे रै आगै उभ'र बतावण लाग्यो, ओ सगळो समान बारो ई है– सिपाई जीप रै लारै खाली खोखा भी लेय'र आया है, ईं री बेरो तद चाल्यो।

बो मांय जाय'र सोग्यो। की पूछण खातर कमला रै मूं सूं हरकत हुई तो बैं सिपायां रै खनै खड़ो रेवण री इसारो कर दियो। कमला रै बाण्डै जाते ई बैं सीरख ओढ़ली। वाह री दुनिया! वाह री किस्मत!! काई काई खेल दिखाणा बाकी है? इन्सान किसी सफ ई ऊं आंख्यां फेर लेवै। ऐड़ो अजब रो नाटकियो है हरेक इन्सान! ओ नाटक भी बयांनी सीख्यो। बैं बिना खोळ ओढ़ै जिन्दगी रा पचास बरस धूड़ मे ई गंवाया। मानवता, सहानुभूति अर दया रै बंद लीलाम सुदा प्लाटां पर बैं घर बणाणै रो विचार करतो रैयो, जद कै लीलामी री बडी बड़ी बोल्दा देयर केई लोग बीनै खरीद'र आपरै खनै राख चुक्या हा।

माथै पड़ण आळा हथोड़ा बैंनै बेचैन कर दियो। आ कांई मजाक है जिकै आदमी खातर आपरो जमीर तक सलटाय दियो, बै बीनै खाणै रै पछै कागद री प्लेट दांई मरोड़'र नाख दियो है। जिकै मिनख खातर बै आपरै जीवण रा अमूल्य बरस दांव माथै लगाय दिया हा, बैंनै बीसूं दो मिनट बात करण री फुरसत कोनी। लानत है, इसी दोस्ती

आत्मीयता पर, अर घृ है इसी जिनगाणी पर जिकै में ठोकर्‌यां खायर भी इन्सान नी चेतै । बार-बार मौतयां देखणे रै पछै जिणी तरै आदमी नै मोत देख'र दहसत नी हुवै वां तरै निरंतर पिटन आळा इन्सान मार रो अभ्यासी हो जावै है ।

'वै लोग ताळो लगाय'र वंग्या है, क बच्चोडो समान दूजै सेप में ले जासी ।' बच्चळा री सपाट सूचना थोडी देर खातर वीरै हिरदै री गति नै तेज करदी अर फेर सांति हुयगी ।

वै एक दूजै ऊं होळै-होळै वंग्या हा क इत्तै में समाज खातर सबेना सा'ब क्यूं परेसाण हुया-थो तो एक दिन नै त्यार हो जातो, पण मेम साब रो हुकम तो ...... ।

कमला धणी रै वैरै सामी देखती रैयी । घायल चिडकली दांई पंख खोलणे रै अंदाज में बा मूं खोलता रा नाकाम चेष्टा निरोधाळ तांई करणे रै पछै बोली—

'कांई वै ब्याव कर लिया ?'

'मनै भी पतो नी है । हू थोई मोसी सेक्रेटरी हूं' बो जिको जोर री चीख ऊं कैणो चांतो हो, वै नी पायो । वीरै पोते पहें के'रै दर भूर्ख होडा नै देख'र कमला चाय'र भी वैं'गे रो हिम्मत नी जुटा पाई, कजट सामनै ई भटक'र हाथ दूर करणे जिस्यी अनुभूति बांव ई बात होती गेई——

□□

उल्टयां कर रैयो हो। बैरै कालजै सूं लेयर रूं रूं मे धूजणी छूटगी ही। जळदी ऊं भाज'र धणी री पीठ मावै हाथ फेरणो सुरू कर्यो। 'म्राह् ''' '''''''ह् ''''''' री भ्रावाज रै सागै उल्टयां कर'र बो उठणरी कोसिस करण लाग्यो। सायरो देय'र बा बीनै पलंगरणै ताई लियाई–'थे क्यूं इतो रद्दै न करो हो?' कांई क्ंध्योड़ै गळै नै लिये बा बारै खड़ी रैयी घर पाणी री बाल्टी मोरी में ढोलण लागी।

'ठक–ठक' दरवाजै ऊपर फेरू' दस्तक—'सक्सैना भावै तो बीनै कैई कठैई बारै गया है।' बड़ी मुस्किल ऊं रुक–रुक'र बो बोल्यो। 'थरै जिकैनै जवाब देणो होसी हूं दीस,' कमला जाणै कांई चुनौती रो मुका–बलो करणनै त्यार खड़ी ही। 'थे चुपचाप सोवा रैवो बिल्कुल मत बोलजा. चाहे कोई लाट सा'ब हुवो।'

दरवाजो खोलतै ई पुलिस री वरदी में जिको भ्रादमी मांय भ्रायो, बै कैयो, 'हूं भ्रातमाराम भठै सिटी कोतवाळी मे हैड कांस्टेबल हूं भर गुरूजी रो चेलो रैयोड़ो हूं।' कमला रै उळझ्योड़ै चे'रै मैं देख'र बो बोल्यो 'हूं सक्सेना सा'ब सूं भी मल्योड़ो हूं। भ्रबार गुरूजी रै बारै में कोई भठै कै रैयो हो कै भठै सूं सक्सेना जी री जिको समान गयो है, बीनै स्टोव रा केई बरतन नी है।' कमला रै चेहरै रै बदळतै रंग नै देख'र बो बोल्यो, 'ईंदा है कै भ्राप नराज ना हुवो, म्हारै ध्यान सूं बानै गलतफैमी हुई है। भ्रठै मिसेज सक्सेना कई घौर नैं भेज रैई हीं कै गुरूजी न भठै बुला भ्रावो। हूं बठै खड़ो हो, मैं कैयो, हूं देख'र भ्राऊं।'

भीतर हालतां काची देख'र घर मांरै डाकरे भ्राफुर्जी नै बोई'र

कमला धीरै सुरां में बोली, 'बां री तबीयत ठीक कोनी पर समान ले जाणैं रै बाद तू बीं कमरे मे ई नी जा सकी।'

कमरो अस्त व्यस्त हो। च्यारूं कानी अखबार, गत्ते रा टुकड़ा, डोरी रा ताणा अर धूड़, कमरै नै ओर ई मटमैलो कर राख्यो हो। काम रै दो चार टूटै टुकडां रै लारै, अंदर फाटेड़ै अखबारां नै हटावणैं ई सुदकना आमण दीस्या। च्यार कटोर्यां, एक गिलास रै साथ दो गिलास चार चम्मच, एक थाली नै रालोड़ा हा।

'बा बेवकूफ कमरै मे पूरी तर्यां ऊ देख्यो नी अर सामान गुम ए री खबर भी कर दीनी' आत्माराम लालपीला होर बोल्यो।

कमला, पल्लो आंख्यां सूं लगायर सिसकती रैयी।

सामान ले'र आत्माराम जीप में बैठण लाग्यो तो कमला करावणैं कैयो, 'जै थोर कांई रैग्यो हुवै तो आपरै निरखा कर'र बना'र आद:। सक्सेना जी सूं कै दिया कै म्हे फोन अबार ई करैई जा रैया हां, किणी कमी रै आय तो भी स्यो ——————— पर बा आपरी मंगटूब उतारणो सद कर्यो ई हो कै आत्माराम जीप नै रवानै कर दी।

'मां सुरग सिधार गयी' सरला रो'र कह्यो अर हाथ सूं मूंडो ढको लियो। संतोस भी 'ग्रोह' कैर रोवण लागी। दोनूं भाई गभीर बण्यां, बारी-बारी सूं लुगाईयां नै देखता रैया। गभीर अर दरदीला माहौल टण रै बीच पग पसार'र बैठग्या। वै अलग-अलग होंवता थका भी उणसूं जुड़ण री कोसिस करण लाग्या।

'चार-पांच दिना पैली सुणी ही कै अबै ठीक है, फेर काई हुयो ?' अनिल सुमील सूं बोल्यो। बो हाथ हवा मांय लैरायो अर भीत सूं टिक'र बैठग्यो। वै सगळा सोचता हा कै किणी निरणय पर पूंगो जावै। किणी दूजै सहर मांय मरती, तो सायद वीनी फरणो पड़तो-रोवणो धोवण री भावुकता उण लोगां मांय ही ई कोनी, पण आ तो सहर रा मामलो है-सागी मां री मोत मांयै-मजबूरी सूं ई सही, आवणो पड़सी।

'उमेश पूंच गयो हुसी' अनिल मनड़ माय सोच्यो। 'समाचार कोनी आवै कै तबीयत इत्ती खराब ही, तो सुनी (बडी बाई) आरानें बुहारा देवती, पर उणनै भायां मांय हगीन अर दादा ही चोखा लागै, बाकी उणरै साकू मर्यादा ईज है।

'दादा सायद दिल्ली गयोड़ा हा, आगै थानै खबर कोनी है कै नीं' सरला आसू पोछ'र बोली-

'अबै किणी ई खबर दी, भाटबन्ना गो सुदै-सुदै हो बसा हुसी। अबै काई फायदो ?' अनिल निरासा सूं कैयो। 'सुनी, आ सूं मिळसो ? हो- मोकै री फायदो उठा लियो हुसी। देखता अबै बहनोईजी कद कैंद अर सगळा साम आवैला।'

उल्टयां कर रैयो हो। बैरै कालजै सूं लेयर रूं रूं में धूजणी छूटगी ही।

'म्है होवण कोनी देवा' सुशीला कैयो 'म्है. इत्ता मूरख कोनी, उमर भर मायां नै घर सूं बारै काढ'र घणा उल्लू बणाया है, अबै जद मायो रां सितयानास करण आली ई होनी रैयी, तो इणरै हाथा मांय नाचण आला म्है कोनी हां।'

'इण लुगायां री खातिर म्है बरबाद हुयग्या।' अनिल उठ'र टहरण लागग्यो।

'म्है काई कर्यो है,' मरला तुणक'र बोली—'बेकार रा दोस म्हारै माथै मंड रैया हो—होमत खुद नै कोनी ही मा सूं लड़ण री। जद बा बेटियां रा घर भर रैयी ही, तद थे म्हारै माथै गुस्सा काढता रैया, घर अबै पिछतावौ।'

'बकवाद मत कर' अनिल कूकियो। सुमील ऊभो हुयो—'हूं थक'र बापरै घर कानी जाऊं, पिको नै बुला'र किवाड़ ग्रोर बंद कर'र आवृ—घालणो तो पड़सी।'

'हूं कोनी जावूं—म्हारी बला सूं कोई जीवै का मरै।' अनिल लेटग्यो।

सुमील ग्रर संतोस जद बारै जावण ला—
बगत म्हानै भी आवाज दे दीजो। जाणो

गुणीस बारै भीतर गयो। घणां ई टा भेळा हुयोड़ा हा। पुरोहित जी तुळसी घर हरीस नै बुलार काई कहण लागग्या हा।

'आग मठै गू' मनिल टाबरां नै धड़कारयो जिकां आगै-लारै ऊभा हा, थोड़ा लारै हटग्या, कई एक टाबरां री मांवां उणरा हाथ पकड़'र मठै सूं निमकगी। ऊभा मिनख भी मठीनै-बठीनै हुयग्या।

'सनान सारू लुगायां नै केवो' पुरोहित जी आदेश दियो, पण लुगायां तो निगुती री ही-दो मेंक मारै बड़ी घर मनिल नै देखती मागण कानी गई परी। मनिल माथै पर हाथ धर'र उणांनै सारी निजरां सूं देखतो रैयो।

धूप उतरण लागी ही-भरथी रा समान भी भेळा हुयग्या हा। 'सगळा गहणा-गांठा बारै कनै है-बा ई भरथी उठासी' हरीस रे बारै मांय सोच'र मनिल हिवड़ै मांय कुढ रैयो हो। मेंक छोरो घणी सारी फूल-माळा ले'र मांय आयो-चमेली री सुसबू फैलगी। उमेश दोस्तां साथै पूगग्यो-मनिल मूंडो फेर'र मेंक कानी ऊभो हुयो।

'दिनूगै तो चंगी-भली ही भांवत काई हुयग्यो? मनिल सूं किणी पूछ्यो।

'मनै काई ठा?' रूखो जवाब दे'र मनिल टुरग्यो।

'मनिल नै बुलावो' माय सूं आवाज आई।

'मा रै पगां माथै नारियळ राखो अर आखरी ~~~~ करस्यो' पुरोहित जी रै कैवतां ई सगळा रोवण लागग्या। म[illegible] । [illegible] बैरी माथै नारियळ राख'र मेंक क[illegible] यो—स[illegible] लागग्या।

काळी कॉटळ

अर तीजरा रा भाव उण रै मांथै खिंचग्या। तद फुंती कूकी.......

'आज ई मां मरी है अर आज ही थे रोळा करण लागग्या। फैसलो हुय जासी, कांई तो सबर करो।'

'नहीं...............हरीश जोर सूं बोल्यो–'इणां नै भिड़ण दो। मां ई हमेसा लड़णो पसंद करती ही, उणरी आतमा नै शांति मिळसी। बा चावती ही कै सगळा जणां लड़ता–भिड़ता रैवै। आछोज मौको है। बा हाळ तांई बळ'र राख भी कोनी हुई हुसी' अर बो देर ताई जोर सूं हसतो रैयो।

बेहद ठाडो लाग रैयो हो। कांधो दरद करण लाग्यो हो। बै बोजे कांई माथै भोळो लटकायो अर पेटी भी दूजै हाथ माय ले लीनी। मांय `मांय सूं गंडका रै सबद री आवाजां आय रैयी ही।

घरं पांवतो बखत बो चोरंग्यो। आंगण मांय कई आणी-पिछाणी सूरतां ऊभी ही। बीनैं देखतै ई दोय तीन आवाजां आई–'तेजो आग्यो है', तद एक ओर सुण रह्यो आगै आयनै तेजा रै हाथ सूं पेटी ले लीनी अर बीरैं मूंडै सामी देख्यो। तेजो मां नैं पिछाण आयै भूल्यो हो कै मां बीनैं छाती सूं लगायर 'सिसकारी भरी.......बो अणूंतो होयर कदै मां नैं अर कदै पाडोसी ऊभी लुगायां नैं देखण लाग्यो।

'थारी छोटी बहन मूनकी आयै देवो आई है' एक लुगाई बीं सूं कैयो। तद 'हाय म्हारी छोकरी.......' कैवर तेजा री मां दोना हाथां मूंडो लुकाय लीनो अर धम सूं धरती माथै बैसगी।

तेजै सगळो घटनावां सुणी। बींरी चौदह बरस री बहन मूनकी री सगाई सबनै चाव करतो आप किण चोरै सूं हुयो हो। बो मोटियार आपरी ऊंट गाडी माथै दो तीन दफा बठीनै आयो हो अर मूनकी सूं मिळ्यो हो, पण बठीनै केई दिना सूं बो मूनकी सूं नी मिल रैयो हो, पण मूनकी ऐक दिहाडा नैं देख्यो कै बो गांव रै बाहर मिल्यो हो तो सूं बात कर रैयो हो–अर सूं ई मूनकी रै लोगो पड रैयो हो। पछार कोई मोभा बाप्डो बंद करनै बो आयै भर-पूंथ कर रैयो हो.......

तेजो बीं कमरे रै बारं बैठ्यो बापू, काकोसा अर दो बडा भाइयां नैं पचेसायलां करे, अनै उदास भाव सूं बठीनै बैठ दो। बठ कांई-कदरसिंह अर नारायणसिंह बी सूं कांई पूछता बातडा पर बो बखत मूनको रै

ग्राग री ग्रावाजां माय सूं धापण नागणी पर बारै बैठी
फुदफुदाहट री… धोगे धुगणो दपदपुण पाळो देवो' मा ब
तेजा रै हिवड़े माय उदासी घणी दवणाट री बढावण घुमटन म
भुलायाँ कै वो इतरो लाम्बो रास्तो पैदल चलनै आयो है अर औ
बीनै घणी जोर री भूख तिस लाग रैयी है……

चांदणो जद कमरे रै किंवाड़ाँ सूं सेलण लागी तद कमरो धु
सगळा ऊभा होया। श्रोझाजी माय सूं निकळ्या-भाग्या, सराव पिवो
दायी रतनारी ही।

'काल फेर आसू' कैनै वो भुमतो-भामतो बहीर हुयो।

मांय दीपक रै हळकै चकासे माय मूनकी अस्त-व्यस्त गाभा में प
ही अर सिसकारी सूं सगळो सरीर हिलतो हो। बोरी मा उण रो माथो
गोद माय धर दीनो अर बा पलै सूं हवा करण लागी। दरवाजै सूं
मिनखां री घणावक, घसारो कर रैयो हो। तेजे सारी निजरां सूं उणनै
देख्यो; कई लुगाइयां पाछी जावण लागी।

'श्रो डोकरो बदमास ओई' मूनकी होळै सीक कैयो। सुण'र मा
रीस सूं बोली 'चुप रह बाळणजोगी।'

'मास्साब डोकरी कोंकर ओई' नेता जिस्से अेक मिनख पूछ्यो।'

'अबै ठीक है, पंचजी।' तेजे रै बापू हाथ जोड़नै कैयो। तद मूनकी
ी अरं गेली दाई हरकतां करती बारै मार्थ मार्थ… ……मिनख,
-होळे घरै जावण लाग्या।

तेजो पाणी रो तीजो लोटो

ीव'नी भोजाई करग करू लियो- तेजाजो इतरो जळ घर माय कोनी; दाळ तो सगळा नें जीमणो भी है। दोपहर सूं ई सगळा परेसाण है।'

'बडी भोजाई जी कठै।' तेजो लोटो पूठो दियो।

'बटीनें खाणो बणावै, प्राज बारी बारी है' भोजी रै दांत चादनी मांय चिळक पड़्या। तेजै नें याद आयो कै जद दो स ळ पहलां प्रा घरै आयी ही, तद प्रार्ने पासै री लुगाया कैयो हो 'बहू तो मूमळ जिसी फूठरी है', भोजी री नथ चादनी रै चकास माय चिळक रैयी ही।

धारा इम्तह न खतम होयग्या? बापू कनै प्रायनै दरी माथै बैसग्या 'हां' बो बोल्यो 'पेपर घणा चोखा व्हैया है। हूं थोड़ी-घणी पोथियां प्रागळै बरस साफ लायो हूं। माड्स री चोखी त्यारी करणी है।'

"दीकरा तूं जाणै थारी मरजी। हूं थोडो ही भण सक्यो, जणैईज प्राइमरी स्कूल माय जिनगी ताई धक्को खावतो रैयो"""प्रबै प्रागळै साल रिटायर हुवणो है" बापू डडो सास लीनो प्रर बूकियै रो तकियो बणा'र बठैईज लेटग्यो। बी टेम हवा रो तेज झोका प्रायो प्रेरै किवाड़ जोर सूं भिड़्या। बडो भा राम प्राय'र किवाड़ ढक्या प्रर बारै सूं बिलाई लगा दीनी। चाद माथै धूल री परत चढ़गी ही।

□□

दुनिया, जठै प्रेक सूं बढ'र प्रेक महानगरा मांय बदळनी जा रैयो है, बठै पोदीना री प्राबादी प्रपेस ही है। मुस्किल सूं सौ घरा री प्रेक छोटी सीक बस्ती, जठै रो सून्याड़ कम मोका माथै टूटै है। बदै बदै सीव पार री गोलाबारी प्रठै हलचल पैदा कर देवै, बठै मामूली-सी बात भी

रद बी री आंख्यां चिळक सूं चमकगी–ज्यूं चहलावणो हुयो हो। "काको, टॅकर गांव बारै ऊभा है" अेक छोरी आ बात कह'र दौड़गी। हिवड़ै मांय कळमळ रो अनुभव कर्यो। बीनै ख्याल आयो कै बी जैसलमेर रै खुलै सिनमाघर री फिलम मांय इसी ईज फूठरी फरी छोरी नै देखी ही। ई गांवड़ै मांय भी इसै रूंळरी छोरी रहै सकै ?

"मा आ कुण ही ?"

"रूपा ही, तनै याद कोनी पहला थारै सागै ही रमती ही, दो बरस पहला लाटी गांव मांय ई रो ब्याह हुयो हो, थारो बापू भी गया हा ······ ······हा, तूं दो तीन बाल्टया लेय'र जा–पानी भर ला। ई टेम तो जमानां घणो मोजो होवै।"

बीचळी भोजी आयनै ऊभी रही। डांक सरीखी काया, घर री दीवारां माथै सोनै री रेखावां मंडण लागी। ताजी हवा रो झोको आयो अर तेजै ऊंनै पूरी ताकत सूं नाक मांय भर लीनो। आंख्यां बंद पांख-डिया, थोड़ी साळ पहलां रै दरसाव नै याद कर'र होळै-होळै खुलण लागी। बी मंछ्‍ मांयै जोर दीनो–'बो जद पांचवें री अेक आदमगी स्कूल मांय पढतो हो, तद रूपा जिसी छोरी भी ही, सायत······अबै तो बापू ई बठैरा हैडमास्टर है। काई है ? घड़ी मुस्किल सूं छोरा नै भेला करै, पण सगळा भाग जावै·······"

"काई सोच रैया हो ?" भोजी मुळकी–"सहर मांय किसी छोरी नै पसंद कर आया हो–"

"भागी जा·······" बो बोल्यो–"बाल्टी कठै है ?"

मिनर्खां मांय मोळो दहशत पैदा करै । सब मूं बड़ो परेसाणी प्रा है कै प्रा जागा दुनियां भर री कळळ-हुँकळ मूं भोत दूर है ।

'तेजो केय प्रोई' मा री प्रावाज मुणते ई वो काल री प्रखबार लियां प्रांगण माय पूग्यो । धूप प्रजू तोड़ी रेत रै टोला माय ही कूद-फाद कर रैयी ही, हेठै नी उतरी ही ।

"ले घोळियो पी" मा गिलास प्रागे कीनो ।

"काल मूं तिस राण्ड बुझै ई कोनी" वो गिलास थाम लीनो ।

"खारा पाणी पीवण री प्रादत छूट्योड़ी है नी" मा कैयो-"घोळियो मांय पाणी घाल'र पीले"

"दोनूं भाई कठै है ?"

"पाणी लावण नै गया है ।"

बीनै याद प्रायो कै प्रठै तीन चार सौ फीट ऊंडे पाणी नै काडण सारू बळदां या करसकां री थोमो लेवणो पड़ै, फेर भी खारो-जहर पाणी पले पड़ै, जी नै पीवता वखत जिनावर भी मूंडो फेर लेवै ।

"मां हूं किती बार कह चुक्यो हूं कै ई गांव नै छोड़ बाळो, काई मिले प्रठै ?"

"लाडेसर !" मां रो चैरो श्रम री खराद पर चढ़नै पक चुक्यो हो-"प्रापरो गांव छोड़नै कुण जावै है ? प्रठै जिनगी गुजारी है, प्रठै ईज मरसां ।"

"मां जैसलमेर बडो जागा नी है, पण प्रठै मूं तो घणी बढ़ै जा'र रेसां । मनै प्रागै भी तो भड़णो है, ई राख्यो है ? हूं तो......!!

अर तनाव सूं ढूंढयोड़ा चेरा, जीवण री निराशा अर हीणता······ बाल्टी हाथ मांय लिय'र सगळा आपां कतरां मांय ऊभा हा। लुगाइयां री कतार न्यारी ही।

तेजे रै दिमाग मांय स्यालां री भीड़ भिड़ रैयी थी। मूनकी री इ सवाल तो बो टिन्नूगे सूं पूछ ई नी सक्यो······ जागण रै बाद सूं ई बो परेशानियां रै उळेरै सूं जूझ रैयो है। काल सूं ई कहर री रात सह रह्यो है। जिको जत सूं बो जैसलमेर सूं बहीर हुयो हो, पण अठै तो अणहूंणी अर दोहरा बीरै लारै हाथ धोय'र पड़ग्या है दो घडी भी बो आराम सूं नी बेठ सक्यो-जियां पूळ आळी बाल्टी बीरै मूंढै माथै नाखी-जगी रहै।

धम'री आवाज रही। आगै ऊभो कोई मिनख पड़ग्यो हो, कतार गड़मड़ व्ही गई। पड़ण आळो मिनख गांव रो डोकरो रिटायरड मास्टर मंगतलाल हो।' "तावडी सूं पड़यो है", 'तिस सूं बेहोस हुयो है" जिसी बातां सुणीजण लागी।

"ई रै मूंढै माथै पाणी रा छींटा दो", तेजे आगै बढ़नै कैयो, पण अठै पाणी कठै हो। तेजो तेजी सूं जा'र टैंकर आळै सूं बोल्यो-"एक मिनख बेहोस होग्यो है, बीनै पाणी पिलाणो है" बो बाल्टी आगै कीधी।

"कतार मे ऊभो" टैंकर आळै कैयो अर बठै ऊभी लुगाइयां कानी जोवण लाग्यो। तद तेजो घड़ो भरनै जावण आळी हेक लुगाई सूं बोल्यो- "मास्टरजी मंगतलाल बेहोस व्हैग्या है, थोड़ो पाणी चाहिजै··········।"
"टैंकर आळा सूं लरयो" आ केय'र टुरगी।

"लो" बा बोली–"जल्दी पुगो, थोड़ी त ळ ताई टेंकर दर्के ...."
बो दो बाल्टी लेयनै बहीर हुयो।

□□

गांव री सींव सूं पेट फार्ड रास्ते मार्य पूरो गांव ई भेळो हुयग्यो हो। पेट सूं ई पगाधक जिसी ऊ रौनक नै देख'र तेजा नै मरुमेळा री ओळम आयगी, जो थोड़ा दिन पहलां ई जैसलमेर मे सम्पन्न हुयो हो। प.ीसर री चकास करती रात, "मूमल" री चळळ-हू ळ अर विदेसी सैलाणियां री घणचक, ऊं अठारा मांय देख तेजे नै घणो हरख -यो। बो बखत भोत खरचो हुयो, जदकै आसै-पासै रा गांव ठरकेल है।

"अरे तेजा तूं कद आयो?" जूणो दोसदार प्रेम बाल्टी लियां रास्ते मांय मिळ्यो।

"काई हाल चाल है थारो?" बीं बाल्टी धरनै प्रेम रो हाथ झाळ लीनो।

"इयां ई है-कितरै सालां सूं ओ गांव अकाल मांय पिस रैयो है-तूं तो सहर मांय मौज-मस्ती करै।" प्रेम रो जीव-ऊक ळो साफ दीस रैयो हो।

"जैसलमेर किसो बड़ो सहर है–बारै सूं आवण वाळा तो सागी दिन ई भागणो चावै। हवै, अठै जिसी दिक्तां बठै कोनी। दुनिया कितरी आगै बढ़ चुकी है अर म्है हेक-हेक बूंद पाणी नै तरसां.........।"

दोइ टेंकर पखवाड़ै-पाछै आया हा, ई वास्तै खींचा-ताणी चाल रैयी ही। चींटी ज्यूं रेंगण आळी लाम्बी कतारां, सूरज री तेज किरणां सूं झुलस्योड़ा मूंडा, आंख्यां मांय जिनड़ी रो अंधियारड़ो अभिशाप, निरासा

अर तनाव सूं कड़योड़ा चैरा, जीतब री दिसाहीणता……… बाल्टी हाथ माय लेय'र सगळा जणा कतरा मांय ऊभा हा। लुगाइयां री कतार न्यारी ही।

तेजे रै दिमाग मांय सवालां री भीड़ भिड़ रैयी ही। मूनकी री इ सवाल तो बो टिनूणै सूं पूछ ई नी सक्यो……… जागण रै बाद सूं ई बो परेसानियां रै अंधेरै सूं जूझ रैयो है। काल सू ई कहर री रात सरु व्ही है। जिकी वगत सू बो जैसलमेर सूं बहीर हुयो हो, पण अठै तो आगीहोणी अर दोहगा बीरै लारै हाथ धोय'र पड़ग्या है दो घड़ी भी बो आराम सूं नी बैठ सक्यो-जियां धूळ आळी बाल्टी बीरै मूंढै माथै नाखी-जगी व्है।

धम'री आवाज व्ही। आगै ऊभो कोई मिनख पड़ग्यो हो, कतार गड़मड़ व्ही गई। पड़ण आळो मिनख गांव रो डोकरो रिटायरड मास्टर मंगतलाल हो।' "तावड़ै सूं पड़्यो है", 'तिस सूं बेहोस हुयो है" जिसी बातां सुणीजण लागी।

"ई रै मूंडै माथै पाणी रा छांटा दो", तेजे आगै बढ़नै कैयो, पण बठै पाणी कठै हो। तेजो तेजी सूं जा'र टैंकर आळै सूं बोल्यो-"एक मिनख बेहोस होग्यो है, बीनै पाणी पिलाणो है" बो बाल्टी आगै कीवी।

"कतार में ऊभो" टैंकर आळै कैयो अर बठै ऊभी लुगाइयां कानी जोवण लाग्यो। तद तेजो पड़ो भरनै जावण आळी हेक लुगाई सूं बोल्यो-"मास्टरजी मंगतलाल बेहोस व्हैग्या है, थोड़ो पाणी चाहिजै………।" "टैंकर आळा सूं लेल्यो" आ केय'र टुरगी।

तेजो आपरी उन्नीस साल री जिनगी मांय ई हालत री आवड़त नी कोधी ही। बो बचपन सूं ई लैवियो रैयो है, हर मिनख रै दुख दरद मांय बो सोभीदार रैयो है, पण स्वारथ रो इतो घिनौनो रूप बीरी निजरा आगै कदै नी आयो हो।

आखिर किण भात बी पाणी रो परबंध कर्यो अर मास्टरजी ने लें'र प्रेम रै सागै घरै पूगग्यो–बो रो रुं रुं बळ रैयो हो। पाछा आवता थकां बो घणो ठीमर हो।

"बडा सहर बापड़ा अपनाम है" बो प्रेम सूं बोल्यो–"कै अठै अपणायत खतम होयगी है। पण अठै ? अठै किसी अपणायत नै चार चाद लाग्योड़ा है ? थोड़ो सीक पाणी सारू मिनख री जिनगी दांव मायं लगा दी जावै। अठै सायत वैद–डाकदर भी नी व्हैला।"

"तेजा, तनै सहर री धुन लागगी है। कुण पूछै गाव नै अर गांव आळां नै।"

"तो सगळी योजनावा, सौंदर्यीकरण रा सगळा पैमाणा अर जिनगी री चमक दमक महानगरां सारू ईज है ?" बो ठावकाई सूं बोल्यो–राजनीति री दखल सगळी जागां जरूरी है ?"

"आप-आप रै भाग री बात है।"

⁂

जद बै टैंकर आळी ठौर पूग्या, तद टैंकर जा चुक्यो हो। खाली बाल्टी लें'र पिसाण आळा मिनख होलै-होलै पाछा आय रैया हा। दरद री तीखी लहर तेजे रै नस-नस मांय चक्कर काढण लागी अर फेर

"हूं पंचमी सूं मिलनैं मानूं" केयर बापू बहीर व्हैया। लुगाइयाँ रो रुदन घर री भीतां सूं सिर फोड़ण लाग्यो।

ஃ

"""""अबै तपती मचळा पर उड़ती बाळू रै विराट जलवब माय करमट माये बापू रै सागै बैठ्यो तेजे रो तन-मन तेज लू सूं बळ रैयो थो। मूनकी री तलास मे बै दोनूं जणा भटक रैया था–दिल अनैं दिमाग सूं थक चुकिया हा।

अकास सूं बरसती काळी आंधी रास्ते माय भीत ऊभी कर दीधी ही। राकेट. सरीखी तेजी सूं काळी बंळी उत्तर बाजी सूं उठी अर सगळै गांव नैं फेंट मे लेंवती लारै कानी आवण लागी। ऊंट री पलाण मायै बैठ्यो तेजो आंख्या फाड़–फाड़नै भळी-गळी अर सामै जोय रैयो थो। बाळू आंख्या माय घुस'र मिरचा सरीखी दरद कर रैयी थी। बो अमूनो सो, मूनकी री तलास मे चारूंकानी जोय रैयो थो। अबार तांई आभै सूं बाळू री मोटी-मोटी रस्सियां लटक रैयी ही। धूल सूं ववाट नैं बचांवतो थको अथाव रेतीलै सागर माय बै हिचकोळा खाय रैयो था। क्यूंइक काळो धब्बो दीसतो, बै चौंक पड़ता। म्हूंकी मूनकी आ काई कर बैठी हैं? बै हिवडै मांय रोवता थकां सोच रैया था। हिवड़ा माय ज्वा-लामुखी फूट रैयो हो, पण ऊपर सूं लाजै नैं ढक'र राख्यो हो।

काळी आंधी गई परी। पण अगास नैं अबार तांई पीळियै आव-रित कर राख्यो हो। आंख्या जठै तांई पुग सकती ही, बठै ताई हरियाली रो नामनिसाण भी हो। सिरफ तपती लू, बाळू रा भांत–भात रा निरत

खोळ

भोत खूबसूरती सूं तराश्योड़ी सिड़क्यां म्हारै आगै-लारै भोत रैदा कर रैयो हो। शीतळ पून कैफ सूं झूमती लोगां रा बधावा कर रैयी ही। अमाप बोइ रो वंडलो गळी-गळी पसर्योड़ो हो। दीनूंवड़ा, फाफोटो गाय रैयो हो अर फोलामण रो इन्तजार कर रैयो थो ……

म्हूं साइकल नै ऊं कोठी सूं काफी दूर राखनै ताळो लगा दियो। टाई री गांठ सख्त कीनी अर अेक दफा सूट कानी देख्यो, ओ रो रोब अजूं ताईं कालेज में हो, हालांकै ओ सात साल पुराणो हो, फेर भी चळक रैयो हो। ईं मुंगाई रै जमाने में नुंवो सूट बणावण रो सवाल ई कोनी उठै। आदमी पर थाळी रा पेट भरै, का मोज मस्ती करै। लोगां नै आवता देख म्हूं भी आगै बढ़ियो। चाबूआं रो गुच्छो ईं भांत हिलावतो रैयो ज्यूं बोदी साइकल नी इम्पाला कार राखनै आयो हूं। चैरै माथै अेक आभिजात्य मुसकान भी चिपका लीनी।

अेम० अे० रै विद्यार्थी सुरेश रो साटो ही। साटो ब्याह रै पगारे सूं दूर ई रैवूं। इण मौके पर ई न्यूंती घोमणा रा तबसीर हिवड़ै में बैवण लागै जिण सूं ठाडी रो आगो बोपर हाथ पावै। ऊं वैसा इन्सान घणो चुस्त-दुरस्त दीखण री कोसिस करै, पण बेढ्की अर बेढ़गी रो मदर

मांय ई मांय चुभतो रैवै। बीज रूप घा है कै म्हैं मादी-ब्याह री घरा-घक सूं दूर रैवरा री कोसिस करूं, म्हूं जाणूं हूं कै अंधूली म्हारी किसमत में कोनी"" ""पण सुदेश तो जिद करनै बैठ गयो। जद ताईं म्हूं हामी भरी कोनी, तद ताईं बो गयो ईज कोनी। बी री सरदा अनै कोड सूं म्हैं भी काबो हुयो। बो म्हारो पट सिस्य हो, ई खातर उणरो लिहाज करणो पड़्यो।

म य पूंचनै ई दो-तीन मोट्यारां बधावो कीनो। अध्येव रो मोटो लेनै सोफै माथै बैठ्यो। बीस-पच्चीस मिनख कानी-कानी बैठ्या हा। अेक-दो मिनख औपचारिकता री मुसकान सूं म्हारै कानी देख्यो, पण म्हूं टावराई री मोटो मुखौटो लगानै घड़ी कानी देखण लाग्यो। म्हारै पागे अेक पोथी म्हारी घड़ी ही,जी माथै म्हूं घणी बेचैनी सूं देख रैयतो। दूर ताईं सोफा, खुरसियां अनै बैंचा लाग्योड़ी ही मोग घड़ै-घड़ै ढग सूं बैठ्या हा। आवणो माहोल मौज-मस्ती रो हो, पण म्हारै साख मो सै घड़बड़ हो। लाग्यो ज्यूं बिनखा री गमारां माद म्हनै छकवी ताईं रास छोड़्यो है। म्हूं समझग्यो कै बारात बईर होवण मे घणी ढाळ है। मकज ई जल्दी आयनै कळळ-जुहार कर रैयो हूं।

टूं मे पाणी रो गिलास लेर कोई हाजर हुयो। अेक गिलास पाणी पी'र रात-दीनो-लिम मोर'यो हो। पूंजै सूं रुमाल-काढ'र होटां सूं घंरो पूंछियो, फेर एकर बरमो साफ कर्‌यो। उरमलो हो'र ऊनै-पूरी देखण लाग्यो। पाकनो ई दो चार, बटा भाईनै बैठ्या। उणरी मोर सत सू देख'र अेक बोल्यो—

'प्रों० ग्ररविन्द नै देख्यो ?'

'देख्यो कोनी' कह'र म्हूं मूंडो फेर लियो। इयां कियां टेम कटसी ? खुद रै ऊपर खीभ ग्रावण लागी कै जद ठाई है कै इसडै मौकै माथै इयांई व्है तद ग्रायो बळ्यो क्यूं ? सुदेश माथै वयावर करणनै ? 'हा, सुदेश कठै ?' म्हूं ग्रैक छोरै सूं पूछ्यो।

'माय मितरा सागै सज रैयो है। मिलणो है ?' उण पूछ्यो।

'ना-रहण दो' कह'र म्हूं घडी देखण लाग्यो। छोरियां सज-धज'र ग्राय-जाय रैयी ही। कदै कदैई उणां रा कटाक्ष म्हारै कानी ग्रा जावता ग्रर म्हूं ऊंचपण सूं ग्रळी-गळी देखण लागतो। ऊंचीताण चोखी बात है, पण उणरै प्रदरसण री हद व्है। गूंगो हो'र वगत री ठेमरी करण सूं ग्रादमी गूंच मे पड़ जावै।""खुद री ग्रणहोणता मांय ई मांय बूड़चण लागी। मांयले सुन्याड़ सूं लडनो घणो दोरो है।

बेकार है ग्रठै ठहरणो। म्हनै ऊभा हुंवता देख कोई पाकली ग्रायो। 'साव ग्रबै थोड़ी सीक देर है। दूलो सज रैयो है' ग्रचूंक ई बो किणी सज्जन नै देख'र टुरग्यो।

मैं फेर बैठग्यो। ग्रसमंजस री करवत कद तांई चालेली ? कोई ग्रायनै म्हारै कनै बैठग्यो—

'सर, इम्तिहान कद सरु होसी ?' उण पूछियो।

ग्रापरै काम रो विसय जाण म्हूं सोरी सांस लीनी। घासणी रै सुरां मे बोल्यो-'हाल डेट तै नी हुयी !'

'सुणियो है कै चुनावां री वजा सूं डेट ग्रागै वधेला !' बी री ग्रांख्यां मांय जिज्ञासा री चकासो हो।

'कुरण कह सकै ? पण थे तो पढाई करता रैवो !' म्हूं घणी ठाव-काई करती।

'मैं नी म्हारी सिस्टर इम्तिहान दे रयी है। हूं नोकरी करूं' बो मुळकयो अर उठ नै गयो परो।

इयां लागयो कै मिनख मैज निजरा सूं म्हनै देख रैया है। मसिमना री खुरचण सूं खुद नै खुस करण री मोकळी कोसिस करी। हिवड़ै मांय मोकळै भावां री पटां-लटी होय रैयी ही, पण म्हूं जाणै उणां मांयै घट-कणी लगा'र बैठो हूं। ध्यान ई नी आयो कै मधुर अर चटकीला फिल्मी-गीत बज रैया है अर बैयी लोगां रा पग उणा रै सागै ताळ देय रैया है। म्हनै नीको आवाज ओखो कोनी लागै—

'मई मांय जा'नै कैवो कै रिकार्ड होळै बजावो, कान बोळा होय रैया है।' म्हू पाखती ऊभै मिनख सूं कैयूं, बो ठेमरी आछी मुसकान सूं मुळकनै बटीनै चल्यो जावै। 'हो''' हो, हाय-हाय' आज रा बावा पाणा बणग्या है।

'किसीक साहब कोर है ?' म्हूं कनै बैठे मिनख सूं ऊब'र पूछ्यो-बो जबाब नी देवै, पण उणरै सागै बैठ्यो कोई कैवै—'बस, कमपटर कानरा साब रो इन्तजार है।'

करंट दाई लो बात लागी। कमपटर कामरा म्हारो मित्र हो, अर अेक टेम सब सूं प्रिय भो। बो उणा दिनां रोजाना घरै आवतो हो, अर अेक तरै सूं उण सूं घरोपो होयग्यो हो। कम्पोटीसन रै दिनां बोल उणनै, लाइब्रेरी सूं मोकळा पोथियां लावणै मांय सूं दिराई।

री पूरी त्यारी में थापज कराई, पर सब तरै सूं उणनै जोश दिरायो। जिके दिन वो पास हुयो, मीठो ले'र घरै आयो। घणी सरद्धा सूं पग छू'र भावुक होय उठ्यो—

'सर, भो आपरी किरपा रो परसाद है, म्हूं तो निमित्त मात्र हो'।

'नी, भो थारी मेहनत रो फल है, म्हूं घणो खुस हूं कै थूं इत्ते बडे कम्पीटीसण में पास हुयो है। म्हारो श्रलो व हमेसा थारै सागै है।'' म्हारो कंठ गळगळो होयग्यो। रुमाल सूं आंख्यां पोंछी।

बो जठै-जठै ट्रेनिंग सारु गयो, बठै-बठै सरद्धा भरया खत आंवता, भेक-भेक चीज रो खुलासो हुंवतो भर बठै आवण रो न्यूंतो भी। पण म्हूं कठै भी नी जा सक्यो। आपणै आलसी सुभाव रै कारण घुड़घुंगं दांई घरै ई पड़्यो रैवणो म्हनै घणो सुहावै। बाहर रो गंमबल म्हनै सुहावै ई कोनी। उणनै लिख दियो कै 'जद थारी स्थायी पोस्टिंग होसी, हर दो महीणां री छुट्टियां थारै भठै ई गुजारस्यूं'-पण बाद में भी म्हूं कठैई नी जा सक्यो-जिनगी थायै घेर-घुमेर करण वाळां गम रा बादळ चारमेर सूं घ घेरा करता रैया, पर म्हूं कदै भी उंजास कानी नी भा सक्यो। ऊपरली हंसी-मजाक पर मौजमस्ती रा अभिनय [illegible] चेतना नै दूरदूर तक करग्यो भर वण फोफली हंसी री परतां मांय [illegible] र, [illegible] रैवण रो वरदान दे'र ई विदाई सीनी [illegible] सूं पहलां ई दहग्या।

[illegible] जिनगी इत्तो [illegible] कै जित्ती म्हैं

री पूरी त्यारी मैं श्रावज कराई, अर सब तरै सूं उगनै जोश दिरायो। जिकै दिन बो पास हुयो, मीठो ले'र घरै आयो। घणी सरद्धा सूं पग छू'र भावुक होय उठयो—

'सर, श्रो श्रापरी किरपा रो परसाद है, म्हैं तो निमित्त मात्र हो'।

'नी, भो थारी मेहनत रो फल है, म्हैं घणो खुस हूँ कै थूं इत्ते बडे कम्पीटीसण में पास हुयो है। म्हारो श्रासी व हमेसा थारै साथै है।" म्हारो कठ गळगळो होयग्यो। रुमाल सूं श्रांख्यां पोछी।

बो जठै-जठै ट्रेनिंग सारु गयो, बठै-बठै सरद्धा भरया खत श्रांवता, श्रेक-श्रेक चीज रो खुलासो हुँवतो श्रर बठै श्रावण रो नूंतो भी। पण म्हैं कठै भी नी जा सक्यो। श्रापणै श्रालसी सुभाव रै कारण घुतुमुंगें दांई घरै ई पड़्यो रैवणो म्हनै घणो सुहावै। बाहर रो गंलबल म्हनै सुहावै ई कोनी। उणनै लिख दियो कै 'जद थारो स्थायी पोस्टिंग होसी, सद दो महीणां री छुट्टियां थारै श्रठै ई गुजारस्यूं'-पण बाद में भी म्हैं कठैई नी जा सक्यो-जिनगी थार्थै घेर-घुमेर करण श्राळा गम रा बादळ चारुमेर सूं श्रंधेरा करता रैया, श्रर म्हैं कदै भी उजास कानी नी था सक्यो। ऊपरली हंसी-मजाक श्रर मौजमस्ती रा श्रभिनय मांयली चेतना नै कूटण सरु करयो श्रर उण फोफली हसी री पैरतां मांय दब्योड़ै दरद, बरोबर बेमार रैवण रो वरदान दे'र ई विदाई लीनी। कल्पना रा गगन-गढ बगत सूं पहलां ई ढहग्या।

श्रसल में जिनगी इत्ती सरल कोनी, जित्ती म्हे समझ बैठ्या हा। मोकळी श्रांसावां-चढावां री बैसाख्यां रै सहारै ई तांगीमोड़ी जिनगी नै

बदताईं संभाळ सकां ? मितरां, परिचितां अर अपणायत भाळै मिनखां
री तथाकथित दोमदारी रा बलिया जद उसडन लागै, तो मनारथ रै
भीमरण धरातळ माथै ऊभो रैवणो घणो मुसकल होय जावै। सहव मन
लिनै भी घोर लोग बोलो नरै मूं रैवै ई है, पण भावनावां रै धरातळ नै
लैने म्हूं भोरो नी रह सकूं।……

कालरा जद ई सहर मांय कलक्टर बण'र आयो तो म्हारै वास्तै
अेक उछव हो। म्हारो जूणो शिष्य जाण नै घणा मिनख म्हारै कनै
आवण लाग्या। मैं भी सोच्यो कै जूणो रिस्तो फेर सूं उजागर होसी अर
उछाव सूं दिन कटसी। पण हरोज इन्तजार करण रै बावजूद, वो नी
आयो तो धीरज रा टांका टूटण लाग्या। अब्दन, निरासा मांय बदळगो।
आणदो मन कुम्हलावण लागो।……

भतीजी री सादी ही। सहर मांय रैहू, चीजां री भारी किल्लत ही।
मन ई बात री मोद्दाद ले'र राजी हो कै इण बगत कालरा ई बदद
करैलो। अर थाळा री टेमरो सूं जद टूटयो, तद सुभिमान रो दफ्तर
छोड'र कालरा रै दफ्तर पूग्यो। जिणनी समझोतै रो दूजो नाव है, पर
आपानै पग-पग माथै भुगतणो पड़ै।

सुभिमान री खोळ उता'र मैं चिट मांय भिजवाई अर बारै बैंच
माथै बैठग्यो। सोचण लाग्यो कै आज अहरन ई म्हनै इण रं द्वार म.वे
लाई है, भीतर म्हूं बरै नी आवतो। म्हनै आयर हैरानी हुवण ला.गी
कै आज हिवड़ो इसा टाळो, दरकाणो अनै बैठ हूलो किसकर हुंतग्यो है।…
हालात, इनसान री आस्था री बबक माथै घालो फेर दवै है।

री पूरी त्यारी मैं श्रापज बराई, पर सब तरै सूं उगनै जोश दिरायो। जिकै दिन बो पास हुयो, मीठो ले'र घरै आयो। घणी सरद्धा सूं पग छू'र भावुक होय उठ्यो—

'सर, श्रो आपरी किरपा रो परसाद है, म्हूं तो निमित्त मात्र हो'।

'नीं, श्रो थारी मेहनत रो फल है, म्हैं घणो खुस हूं कै थूं इत्तै बडै कम्पीटीसण में पास हुयो है। म्हारो ब्रह्मवं हमेसा थारै सागै है।" म्हारो कठ गळगळो होयग्यो। रुमाल सूं आंख्यां पोंछी।

बो जठै-जठै ट्रेनिंग सारू गयो, बठै-बठै सरद्धा भरया खत आवता, श्रेक-श्रेक चीज रो खुलासो हुंवतो अर बठै आवण रो नूंतो भी। पण म्हूं कठै भी नी जा सक्यो। आपणै आलसी सुभाव रै कारण धुतुमुंगं दांई घरै ई पड़यो रैवणो म्हनै घणो सुहावै। बाहर रो गंलबल म्हनै सुहावै ई कोनी। उणनै लिख दियो कै 'जद थारी स्थायी पोस्टिंग होसी, सद दो महीणा री छुट्टियां थारै अठै ई गुजारस्यूं'–पण बाद में भी म्हूं कठैई नी जा सक्यो–जिनगी आपै घेर-घुमेर करण आळा गम रा बादळ बाहमेर सूं म्हनै घेरा करता रैवा, अर म्हूं कदै भी उजास कानी नी श्रा सक्यो। ऊपरली हंसी-मजाक अर मौजमस्ती रा अभिनय आयली चेतना नै कूटण सरु कर्यो अर उण फोफली हसी री परतां मांय दब्योड़ै दरद, बरोबर बेमार रैवण रो बरदान दे'र ई बिदाई लीनी। कळपना रा गगन-गढ बैगस सूं पहलां ई ढहग्या।

असल में जिनगी इत्ती सरल कोनी, जित्ती म्हे समझ बैठ्या हा। मोकळी आसावां री बैसाख्यां रै सहारे ई लांगीमाळी जिनगी नै

घणताळ पछै बुलावो आयो। बळनोरड़ सुभाव नै सहेज माप गयो। उठ'र हाथ मिलांवता थका कालरा कैयो—

'सारी, मि व्यास। घणी दफा सोचणो, पण आपरै अठै आवण रो टेम ई नी मिळयो। आपनैं बुलावण रो मोनो, पण सिपाही आप रा मकान ई नी जाणता हा··· खैर, काई हालचाल है ?'

'मि. व्यास !' तो आ गुरुदक्षिणा है। क्यूं इनसान थोथो दिखावो करै अपणायत री कूणी सान सू थेटालग लग्यो रैवै। इण री तोल-मोल करण री जरूरत ई कांई है, पण विस्वासघात रो ताऊणो खाय'र सीखै कोनी।····खैर, जद खोळ बारै ई नाख नै आयो हूं, तो पूरी बात कर लेणी चाहिजै।

'बात आ है' म्हूं सुर नै सयत राख र कैयो – कै भतीजी मुनिया री जिकै नै तूं-थे घुमावण नै ले जावता–आगले महीनै सादी है, ई खातर····

'गेहूं, चीणी, किरोसीन····'बो अधबीच ई जोर सूं हस्यो-ज्यूं म्हारै मूं थापै थापट धर दीनो हो। फेर हसी रोक'र बोल्यो—'आज दिनूगै सूं दस लोगां सारू डी. एस. ओ. (जिला रसद अधिकारी) नैं फोन कर चुक्यो हूं। आपरै वास्ते भी ट्राई करस्यूं, पण मुस्किल दीसै, थे म्हारै भरोसा ना रैया....ओर कोई काम हुवै तो ··'

'बाकी सब ठीक है' ठाडी आवाज सूं कह'र म्हूं बारै आयो। साचो, ठरेस मिनख किसो ठालो-भूलो व्है।

बो ई कमरो आज अठै खास मिजमांण है घर सुरेस उणरो इन्तजार कर रैयो है। म्हूं घड़ी देखी, अठै आपनैं अेक घन्टे सूं बधीक

सूं भी तो माद्यो है कै घड़ावा नैं ई नी वधायो जावै, पण मन री कम-जोरी सूं भी तो म्हूं वाकिफ हूं। वो कूं हर बात में घालमेल करै अर लोगां रा ऊजळो-जुहार सह्वै ?....

घड़ी पर निजर घालतो म्हूं बडे दरवाजे सूं निसरण लागूं। गीतां रा सुर कानां नैं भरणगम लाग रैया है... आणंद-मंगल रा आगमीन आख्यां नै चुभण लागग्या है... म्हनै आसा है कै कोई म्हनै आर वरजैलो सुदेश दौड़तो आवैलो, मनुहार करैलो... आणो-टाणो रै मौतर मावै म्हारी जरूरत नै महताऊ बतळावैलो... अर म्हूं भनमथ बण'र उणनै खरी-खरी सुणावूंलो....पण ...पण कोई नी आयो, एं आपरी दुनिया माय मगन हा....

निर्मम आसा रै आपायत कूटे नै भटके सूं छोड़'र म्हूं बारै निसर आवूं हूं....

●●

देख्यो, भायली उपा बी नें दपतर मूं देर रैयी है । "कैलो तूं, काई सोचै ?" वा पंटगी । "हूं जाणूं हूं कै तू काईं सोचै, पण जिनगी कोरै रोवण सूं पार तरदीज कोनी सूं नी चालै–" हूं भी पहला घणी उदास रैवंती ही, पण मैं जो लियो है कै जीवण री धारा नै मनमरजी सूं वहवण देऊं'सी, क्यूंकै म्हारै सोचण सूं हालात मांय बदळाव पर गजयोह कोनी व्है । वगत अर जमानै री टोहरा सूं मिनख बच कोनी सकै नी । बद मन सूं ई काई काम व्है नकै ।"

लता मांख्यां पोंछण लागी । उपा फेर बोली–"समाज रो ढांचो इसो बणग्यो है कै आदमी खुल'र सांस कोनी ले सकै । घरमेंडा री घणहट सूं बो जजर हुय जावै । खैर, जावा दै इण बातां नै आज पढ़ाई कोनी करणी कै ।"

"जाणै क्यूं पढ़ण री तबियत कोनी करै, कीं नुंवी बात कर ।"

"तनै ठा है ?" उपा होळै सीक बोली–"म्हारी सादी रो विज्ञापन अठै सूं भेज्यो जा चुक्यो है । मन नी लागै तो सादी री बाबत आलोच कर ।' लता रो मूंढो मोलज सूं लाल हुयग्यो ।

"लागै है कै सादी रो तनै घणो चहाव है" लता ठळोकड़ी कीनी– "आज हूं वहूलजी सूं कैवूली कै उषा री सादी जल्दी सूं कर द्यो ।"

"साची कह" उपा रो भैरो ठीमर हो– "तनै सादी रो सौक कोनी ?' "सौक !" लता ठावकाई सूं बोली, पण चुप हुयगी । सामै देख्यो, रूंखां हेठै अनाथालय रा टाबर-टींगर रम रैया हा । क्युंइक नल सूं पाणी भर रैयो ही अर क्युंइक रूंखां हेठै ऊभी ही–मोटा

गाभा बाँगे तबनीदे सरीर मायँ मूंडा लग रैया हा, पण वा हंसती-गावती जिनगी रै गमां भर नगन-मगाम सूं घेट हो। माग्य रै ठैंते सूं वा बेखबर ही "काई जिनगी है ?" सता बोली, भर पाणी भरण सारु उपा माथै दुरगी।

□□

समाज पीसा ग्राळा रा है, जिनगी पीसा ग्राळां री है। वो लोग ई समाज भर जिनगी नै खुद री मनमरजी सूं चलावै। बारोठ मिनख भी पीसा रो मोवो लेनै बखाण हासिल करै। सता सरै उपा जिसी सैंकड़ूं छोरियां, इसै बारोठ मिनखां सूं लगन लेय'र खुद री जिनगी नै बरबाद कर लेवै। ई समाज माय धन भर पद रीज कीमत है, इन्सान री कोनी। बडे मिनखां रै पापा रो कोई हिसाब कोनी। पीसा मगळी बुरायानां रो ढाबरण है। वा लोग खुद री वासनावां नै किण भांत तृप्त करै, पण फेर भी खुद मार्थ कोई ग्राच नी ग्राण देवै, पण इसा मिनख नी जाणै कै उपा भर सता जिसी छोरियां कठै जासी? कीकर जीवैली? इसा बारोठ मिनख राजनीति रा बहिनायत भी हुय जावै। ई लोगां रै हिवड़ै रै मठाण सायँ पत्थर बाण्योड़ो है-पत्थर नो ठोकर मा'र जागा छोड़ देवै पण इण संगदिलां मायँ की ठोकर रो भी ग्रसर कोनी व्है।

सता जिसी छोरियां भापरै करमां नै रोवै पण उणां रा ग्रांसूं धरती मायँ पड़'र गुम हुय जावै। इण आंसुवां रो किसो मोल है ? मिनख रो ई मोल कोनी। जाणै कद ग्रादमी, ग्रादमी रो मोल क

मांय ? सिरफ म्हारै ? वै भी दुनियां सूं लुकोवणा पडै, कंठ तांई भरयोड़ो दरद बारै तांई नी लाय सकै… निवार लता नै सुषमा री याद आवी बीरो पर याद आयो…

घर किणनै कैवै ? अठै तो मोकळाबोळ कमरा बण्योड़ा है, जठै मिनखी रिहायश है पर मांय न्यारा-न्यारा कमरा हुसी… पड़ण रो न्यारो, बैसण रो न्यारो, म्हारो घर किनो ऊंडो हुसी ? जठै बी घडभरण नी हुसी… घर ! कित्तो गजबोड़ बाळो सबद है । हिवड़ै रै उबट मारगां सूं रंटघर-जठै सुड्यो हैन कोनी, जठै रड़ भावनावां मांय पगोळो करै हिवड़ै री मावणी भावनावां, चहावां पर आसोचा सूं जुड़योड़ो सबद है घर !…नान्हो सोक घर, छोटा सोक फुलवारी, जीवण री सत घर दुखकाई…जठै खोरसी पड़िसा कोनी, सिरफ टाडी बयार है…हूं जाणूं कद तिण घर जावूंली ?

ई विचार सूं बा खुद ई सरमाणी अर सिराणै मांय मूंडो लुकाय लियो । बी नै ख्याल आयो कै सादी रो विग्यापन दियो बा छुपयो है—बा उणांम लेय'र सोवण री कोसिस करण लागी…

ध्यारू मेर उमयर धमास बाय हा रैवा दा । कदै कदै बीमा पड़ण सूं धरती खुसबू फैला रैयी ही । धूर रा बोर, बयार सूं बुरद हार नुवना हा । बंद असपभ कदै-कदै बडबडाटा करता हा, पण बीजळी री बैड़ाई सूं डर'र सांत हुय जावता…

सदा धमाय बाबो देख रैयी ही ।

लता रोवती अर खुद नैं समझावती कै जद जिनगी मांय तुमो अर गमत हुँवती तद माईत इयां क्यूं छोड़ जावता ? अबै जिनगी माय सिरफ अंधेरो है, मोलर खोहे अर अप्रमेय अलसेट है। सुणीजै है कै नदी, सागर सूं मिलण नैं जावै है, चांदनो री करसारां सूं चाद दुनियां माय चितराम बणावै है—सगळा पदारथ अंक दूजै रै बरजोड मांय बध्योड़ा है, पण मनैं, भाग्य सूं भफाळा ई मिळ्या है। बालोपैन सूं ई जीवण रै बियाप री कमी ई दीसै है। मिनख बखतवत भी हुँसता व्हैला। कदै बारै नीं नीसरी, म्हारै साह श्रो अनाथालय ई पूरो संसार है।

बीरी आंख्यां रै सामै किलास री भायली सुषमा रो चितराम घूमग्यो। सुषमा बीं सूं थोडी घणी इकळास राखती ही, प ण बा सूं खुल'र बोलण री मोको ई नो मिलतो। सुषमा अेक दिन बा सूं कैयो "लता ! थूं म्हारै घरै चाल !"

"कियां चालू" उदासी रा जलग्रम बीरै डेळदार मूंडै मार्थ छायग्या। "थू जाणै है कै आसरम सूं बारै जावण री इजाजत ई कोती बलसवळ आळा ई दुनिया मांय गमत कर सकै है, हूं...." अर बा रोवण लागी। "लता" सुषमा बीरै कांधै मार्थ हाथ धर्यो—"तू घबरा नी। जिनगी अेक सरीसी कोनी रैवै....तनै भी बालोच मिलसी...."

बीं रात लता नै नींद कोनी आवी। अगास मांय फूलमद सूं झूमता तारा हा, जी री झिलमिलाइट मांय बा खुद नैं खोवण री कोसिस करण लागी। कितरी फूठरी जागा है आ अगास, जठै पूग'र मिनख आपरै दुख दरद नैं भूल जावै, बठै ई नेठाव पावै....कोई रांद्यो है नासवान संसार

'तू आसो थोड़ो काई सोचै ?' कनै बैठी उषा पोथी नै बंद करतै बोली।

लता चुपचाप बैठी रैयी। निरंतर बेरोनी बीरै हिरदै नै भावरत कर रैयो हो। भास्रां मांय यावस री जागा निराशा ठेव राव रैयी ही। बखत पिसट-पिसट नै गुजर रैयो हो। अमूंक बी सामै देख्यो। जीप नै सूं मधुंडक मोटियार नीसर रैया हा। उषा भी देख्यो अर ठलोक्ड़ी क री।

"लता, आ मोटियार तनै देखण नै आया है"

"भालीजा भंवरा जुएलै पुरबा मानै ई आवै।" लता मुळकी। बी री आंख्यां मांय नोखो चहलावणो होय रैयो हो।

"कित्ती राजी हुयी है, मोटियारां नै देख।" उषा फेर छेड़्यो।

"म्हारा राम।" लता उसांस लोनी, "कित्तो मेल खेलणा पड़ै जिनगी मांय, अर कित्ता नाटक करणो पड़ै ?"

"चुप....." उषा री बात पूरी होवण सूं पहला ई रधिया बठै पुगगी। बा छोरियां री देखभाल करती ही, अर सगळी छोरियां सारू बा मां सूं बढकर ही।

"थे लोग बेदिलगीर क्यूं हो ?" रधिया मुळक'र बोली- "आज तो आप लोगां रा चोखा दिन है, मोटियार सादी सारू देखण नै आया है। बहणजी कैयो है कै थे लोग डोळदार गाभा बीजा पहर'र, बणाव बीजा कर'र तीजी ताल हाल मांय पुगो"...ऊभा हो, मनै फेरनी आवणो पड़ै"...।

हिवड़ै माय काळी चोटी, नैणां मांय धारणा रा जळजोर अर मीट सू कापता होठिया बट कमर माय दानोदळ ऊभी ही अर बहूराजी मोटियारा सूं सगळा री ओळखाण करा रैयी ही। खुद रै विचारां माय माळझी लता निजरा हेठै कर र ऊभी ही–

□□

"थारो नाव कांई है ?" देख्यो, सलवार-कमीज पहर्‌योड़ो एक मोटियार बी मूं ई पूछ रैयो हो, जिकै री दीठ माय चाव अर बहाव हो। लता री दीठ बी सू मिली, बी रै आंख्यां सूं लता री आदड़न मन माय माळ करण लागी।

"लता।" बडी मुसकिल सू वा बोली।

"वाह! चोखो नाव है ?" बो मोटियार बोल्यो– "किसी किलास में भणो ?" लाज सूं लता बोल नी सकी। मोटियार कानी एक टंक देख्या, अर निजर नीची कर लीनी। बहूराजी लता री पूरी ऐंठ-पैंठ बी मोटियार नै देखण लागी। लता रै मन माय उदास होय रैयो हो…

□□

"लता !" बहूराजी कमरै मांय बुलाय'र कैयो–"ए सवै सदाणी होयगी है खुद रो भलो-बुरो भी जाणै है। थे लोगां नै देखण सारू आ सगळा मोटियार आया हा।"

लता लाज सूं राती होय'र ओहरली कानी

धक्-धक् कर रैयो हो। बी नैं इम फट देख' बहूजी बोली-

"घबरावरण री बात कोनी छोरी तो पराओ धन है, ग्रेक धा तो बीनैं जावैरा ई पड़सी" ग्रा काम ताकड होय जावै तो ठीक। बात ग्रा है कै बो सलवार कमीज गाळो मोटियार तैं मूं सादी करणी चावै है, तनैं मंजूर है तो रधिया सूं पूछताछ करलें बीनैं हूं समझा दियो है....

... हिवडे माय भावनावा रो ज्वार ग्रर तरदोज लेनैं के बा बावडी जीवरण रो महताऊ ग्रगै हो। बीनैरा कोरण री कोसिस करी, परण की तैं नी कर सकी। ठानी उपा कठै है? बा कमरे माय पूगी, रधिया बठै ऊभी ही।

"लता बिटिया, थूं लोगा नैं घरणी फूटरी ग्रर चोखी लागी है-ग्राज तो थूं ई मोकळी बखतवती है" ग्रबै थूं सादी करनै, घर बसानै, मठै कद ताई रैवेली, दुनिया घर सरीर रा सुख भी...."

लता रधिया रै कांधै सूं लग र रोवरण लागी। रधिया बीरै सिर मायै हाथ धरनै सांत करावरण लागी, बा लता रा ग्राहूँ पोछनै मुदरा सुकावरण लागी-' रो मत गैली, छोरी तो पराई रहै ई है, ग्राज नी तो काल, छोरी नैं जावणो ई पडे। मोह रा बरजोड तोडना घरणा मुस्किल है, परण ग्रापा रै हाथ मे काई है ? हा बोल, बी सळवार गाळै बाबू जगदीशजी रै बरै मे थारो काई ख्याल है?

"हूं काई कै सकूं?" लता होळै सीक बोली।

'जगदीशजी मटै रा मानीता वकील है, घरणा पीसा है....परण समाज मे सुधार लावरणो चावै। घरणो मदवीर है। थूं बीरै सागै जरूर

कानी देख्यो अर खुद ई सरमागी । जगदीश जी रो श्रो धारेबो नीं हो, निहग हो थो अजूनोडी ..... लता श्रेगमी सूं भळागळा देख्यो..... आख्या किणी मस्त-मादक सुपणा सूं बंद हुय रैयो ही । बी टैम जगदीश जी बी रै काना सूं मूंडो लगा र हौळै सीक कैयो.....

"लता, आपा रो घर आयग्यो है!"

अर लता आख्या खोल'र देख्यो ~ सामै अेक विसाल भवन रोसणी सूं चिलक रैयो हो ।